सृजन

अंक - 36

हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे

दिनांक 7.11.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण का दृश्य

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का दृश्य

सृजन

अंक - 36 वाँ

संरक्षकगण

संजीव कुमार
मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व रेलवे, हावड़ा

बिनय प्रसाद बर्णवाल
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रशा.)
पूर्व रेलवे, हावड़ा

संपादक

प्रेम कुमार भारती
राजभाषा अधिकारी

सहयोगी

**सालुका लागुरी,
आरती कुमारी मिश्रा,
बिकाश कुमार साव, सुमित सिंह**

संपर्क सूत्र : राजभाषा कक्ष,
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
पूर्व रेलवे, हावड़ा

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखक/रचनाकार के अपने हैं। इसके लिए संपादक मंडल किसी भी प्रकार से जिम्मेवार नहीं होगा।

राजभाषा अधिकारी पूर्व रेलवे, हावड़ा द्वारा प्रकाशित
कंप्यूटर-एन-मीडिया द्वारा मुद्रित

अनुक्रम

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृ.सं.
1.	शुभकामना संदेश		2
2.	शुभकामना संदेश		3
3.	संपादकीय		4
4.	हिन्दी दिवस विशेष : जन जन की भाषा हिन्दी	साभार - रमेशचन्द्र मिश्र	5
5.	विजेता	अरूपम माइति	6
6.	बड़ी बात	पूर्णेन्दु शेखर सिन्हा	8
7.	तितली	अजन्ता साहा	8
8.	उम्र और सेवा	राकेश रौशन	9
9.	बूढ़ा जैसा चेहरा	नितेश कुमार सिंह	10
10.	नारद और माया	ललित कुमार मालाकार	11
11.	श्री गुरु अर्जुन देव जी : तेरा कीआ मीठा लागै। हर नाम पदारथ नानक मांगै।	जगमोहन सिंह खोखर	13
12.	जिंदगी को यूं जाया न कर	मनोज कुमार प्रसाद	15
13.	मेढ़क	मनोज कुमार राय	15
14.	राम लला - निहाल अयोध्या	अशोक कुमार पाण्डेय	16
15.	पर्यटन की कुछ यादें	कामेश्वर पाण्डेय	17
16.	रेलगाड़ी में अर्ध आरक्षण	मुन्ना सिंह	18
17.	रक्षक बना भक्षक	बिकाश कुमार साव	21
18.	हावड़ा मंडल की वर्ष 2023-2024 की उपलब्धियाँ		22
19.	दाग अच्छे हैं !	रवि कुमार	24
20.	साहस से सफलता	वी. के. त्रिपाठी	25
21.	एक अविस्मरणीय संस्करण	रेणु सिन्हा	26
22.	राणा सांगा - एक महान योद्धा	सुमित सिंह	28
23.	हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम		32
24.	राजभाषा विषय पर विभागीय परीक्षा-उपयोगी प्रश्नोत्तर		33
25.	राजभाषा प्रोत्साहन / पुरस्कार योजनाएं		39
26.	फाइलों पर टिप्पणी में काम आने वाले वाक्यांश		43

शुभकामना संदेश

नव वर्ष में हावड़ा मंडल के राजभाषा विभाग की राजभाषा 'ई' पत्रिका 'सृजन' के 36वें अंक का प्रकाशन अति प्रसन्नता का विषय है। पत्रिका में मूल रूप से केवल लेख एवं कहानी को ही प्रश्रय नहीं दिया गया है अपितु इसके अतिरिक्त कार्यालयी कार्य में सुगमता हेतु फाइलों पर टिप्पणी में काम आने वाले वाक्यांश, कार्यालय से संबंधित सर्वाधिक बुनियादी शब्दावली के साथ-साथ राजभाषा प्रश्नोत्तरी एवं प्रशासन में सामान्य रूप से प्रयुक्त कुछ अभिव्यक्तियों और मुहावरों का समावेश भी किया गया है जो राजभाषा के प्रचार-प्रसार में काफी सहयोगी होंगे।

चूँकि हावड़ा मंडल 'ग' क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, ऐसे में अपनी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा को आत्मसात करना थोड़ा कठिन तो है पर असंभव नहीं है। हम जिस भाषा का प्रयोग जितना अधिक करते हैं उसमें दक्षता उतनी ही होती है। इसलिए व्यक्ति अपनी मातृभाषा का प्रयोग बड़ी सरलता से कर पाता है। यही सुगमता हमें हिंदी में प्राप्त करनी होगी और यह तभी संभव होगा जब प्रत्येक कर्मचारी हिंदी में अपने कार्य में दक्षता हासिल कर ले। मुझे यह बताते हुए अपार खुशी हो रही है कि दिनांक 27.07.2023 एवं 28.07.2023 को मालदह मंडल के रेलवे इंस्टीच्यूट में अंतर मंडलीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2023 का आयोजन हुआ तथा इस प्रतियोगिता में हावड़ा मंडल द्वारा हिंदी नाटक 'नहीं' का मंचन किया गया और नाटक के उत्कृष्ट मंचन के परिणामस्वरूप इस मंडल को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । नाटक के सभी कलाकार अहिंदीभाषी थे परन्तु इनके सफल प्रयास ने हमारे मंडल को गौरवान्वित किया।

आज राजभाषा का प्रयोग सरकारी कार्यालयों में ज्यादा से ज्यादा किया जाना चाहिए, क्योंकि इसके सतत् प्रयोग से ही इसकी जटिलता को कम किया जा सकता है। इस पत्रिका में हमारे रेल कर्मियों ने अपनी भावनाओं को कहीं लेखनी से अंकित किया है तो कहीं चित्र में उकेरा है। उनके इस प्रयास की मैं सराहना करता हूँ तथा हावड़ा मंडल की इस 'सृजन' पत्रिका के सफल एवं सतत प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(संजीव कुमार)
मंडल रेल प्रबंधक
पूर्व रेलवे/हावड़ा

शुभकामना संदेश

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हावड़ा मंडल की 'सृजन' पत्रिका का 36वां अंक ई-पत्रिका के रूप में आपके समक्ष है। पत्रिका कार्यालय में सकारात्मक माहौल बनाने के साथ-साथ हमारे अधिकारियों/कर्मचारियों के अन्तःकरण में छुपी प्रतिभाओं को लेखनी के माध्यम से प्रस्फुटित करने में सहायक सिद्ध होती है। इस अंक में कहानी, लेखों तथा कविताओं के साथ-साथ पदोन्नति हेतु समय-समय पर हावड़ा मंडल में आयोजित होने वाली विभागीय परीक्षाओं में राजभाषा संबंधी पूछे जाने वाले प्रश्नोत्तर भी द्विभाषी रूप से शामिल किये गए हैं ताकि इसकी उपयोगिता बनी रहे।

भारत सरकार की राजभाषा नीतियों का पालन करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। इसी आशय को ध्यान में रखते हुए गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-2024 का वार्षिक कार्यक्रम इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है ताकि हम सभी 'ग' क्षेत्र हेतु अनिवार्य लक्ष्यों को (जैसे - राजभाषा नियमानुसार हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर एवं हिंदी में हस्ताक्षरित आवेदन, अपील आदि के उत्तर भी अनिवार्यतः हिंदी में ही दिये जाने चाहिए) प्राप्त कर सकें। राजभाषा के प्रयोग-प्रसार हेतु सचेष्ट होना हमारी कार्यालयी मजबूरी न हो, बल्कि जब हम हृदय से हिन्दी को अपनाएंगे, हिन्दी स्वतः ही अपने मुकाम तक पहुँच जाएगी।

मुझे विश्वास है कि हावड़ा मंडल राजभाषा विभाग की यह गृह पत्रिका 'सृजन' अपने नामानुसार आप सभी को कार्यालयी कार्य हेतु सतत सृजित करती रहेगी। पत्रिका प्रकाशन में सहयोग करने वाले सभी लेखकों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में इसी प्रकार अपनी लेखनी को साहित्यिक गति देते हुए पत्रिका के प्रकाशन में सदैव हमारा सहयोग करते रहेंगे। मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु राजभाषा अनुभाग के संपादक एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा सुधी पाठकों से यह अनुरोध करता हूँ कि आप सभी पत्रिका से संबंधित अपने सुविचारों से अवश्य ही हमें अवगत कराने का प्रयास करें ताकि भावी अंक के प्रकाशन में इसे शामिल किया जा सके।

(बिनय प्रसाद बर्णवाल)
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रशा.)/हावड़ा

संपादकीय.......

सुधी पाठकों,

भारत में हिंदी पत्रिकाओं का श्री गणेश 30 मई 1826 को पं. युगल किशोर शुक्ल द्वारा किया गया जिन्होंने उदन्त मार्तण्ड पत्रिका का संपादन और प्रकाशन किया। यह पत्रिका कलकत्ता से प्रकाशित हुई। हिंदी पत्रिका के शुभारंभ में कलकत्ता वर्तमान भारत में 'ग' क्षेत्र को यह गौरव प्राप्त है और तब से हिंदी पत्रिकारिता की जो अविरल धारा एक बार प्रवाहित हुई वह आज तक प्रवाहित हो रही है।

इसी क्रम में हावड़ा मंडल पूर्व रेलवे की हिंदी ई-पत्रिका 'सृजन' का 36वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। भारत सरकार की राजभाषा नीति का कारगर कार्यान्वयन, विशेषकर प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में इन पत्रिकाओं ने अहम भूमिका निभाई है। इन पत्रिकाओं में संगठन की गतिविधियों, उपलब्धियों, कर्मचारियों की लेखनी प्रतिभाओं को भी उजागर किया गया है।

मंडल की गृह पत्रिका 'सृजन' मंडल में राजभाषा हिंदी प्रयोग-प्रसार में अहम भूमिका निभाती रही है। अधिकारियों व कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ अपनी रचनाओं से इस पुण्य कार्य को अंजाम दिया है। इसके अलावा पत्रिका के संरक्षक मंडल रेल प्रबंधक और अपर मंडल रेल प्रबंधक (प्रशासन) का भी अहम योगदान रहा है जिन्होंने अपने प्रशासनिक सहयोग से इस पत्रिका के प्रकाशन में अहम योगदान दिया है जिसके कारण यह पत्रिका मूर्त रूप प्राप्त कर पाई है।

दिनांक 07.11.2023 को संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा हावड़ा मंडल कार्यालय का निरीक्षण किया गया जो अंततः सफल रहा। पत्रिका में इसकी कुछ झलकियाँ परिलक्षित हैं।

पाठकों से अनुरोध है कि अपने बहुमूल्य सुझाव साझा करते रहें ताकि पत्रिका का स्तर और उन्नत किया जा सके। अंततः मैं राजभाषा विभाग के कर्मियों को भी साधुवाद देता हूँ जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग किया है।

(प्रेम कुमार भारती)
राजभाषा अधिकारी
पूर्व रेलवे/हावड़ा

हिन्दी दिवस विशेष : जन जन की भाषा हिन्दी

साभार-रमेशचन्द्र मिश्र
पूर्व उप महाप्रबंधक/राभा/भा.रेल

हिन्दी संसार की एक विशाल आबादी में शुमार बेशुमार लोगों की भाषा है। जिस अंग्रेजी भाषा को आज कुछ लोग विश्व भाषा बताकर उसकी अनिवार्यता की वकालत करते हैं और उसके पक्ष में आधारहीन तर्क देकर उसकी तारीफ के कशीदे पढ़ने की कबायद करते हैं, उस अंग्रेजी भाषा का नंगा सच यह है कि पश्चिमी यूरोप में ब्रिटेन को छोड़कर एक भी देश में अंग्रेजी नहीं बोली जाती है । फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, स्पेन और पुर्तगाल में से किसी भी देश में अंग्रेजी का प्रयोग नहीं किया जाता। अगर पूर्वी यूरोप पर नजर डालें तो वहाँ भी किसी देश में अंग्रेजी का प्रयोग नहीं होता न जर्मनी न इटली और न ही पूर्व सोवियत संघ से अलग हुए किसी अन्य देश में। संसार में लगभग 50 मुस्लिम देश हैं और इनमें से एक भी देश की जनता अंग्रेजी नहीं बोलती। पश्चिमी एशिया के मुस्लिम देशों में अगर अरबी और फारसी भाषाओं का इस्तेमाल होता है तो अफ्रीकी मुस्लिम देशों में केवल वहाँ की अफ्रीकी भाषाएं बोली जाती हैं। मलेशिया, इंडोनेशिया और मलाया में से कोई भी देश अंग्रेजी भाषी नहीं है ।

यदि एशिया में ही देखें तो पूर्व का एक भी देश अंग्रेजी नहीं बोलता न जापान, न कोरिया, न चीन और न मंगोलिया। इसी तरह दक्षिण एशिया और मध्य एशिया के एक भी देश की जनता अंग्रेजी नहीं बोलती समझती। अफ्रीका महाद्वीप के एक भी देश की जनता न तो अंग्रेजी बोल पाती है और न ही समझ पाती है। इसलिए प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि फिर अंग्रेजी कैसी विश्व भाषा है?

इन हालात को देखते हुए कभी-कभी यह सोचने को मजबूर होना पड़ता है कि हमारे अपने देश में होने वाला हिन्दी का विरोध कहीं किसी विदेशी साजिश की उपज या करतूत तो नहीं है? वाशिंग्टन विश्वविद्यालय के प्रो. सिडनी कुलवर्ट के निर्देशन में प्रकाशित " World Almanac and Book of Facts" के अनुसार संसार में 3.5 प्रतिशत लोग अरबी भाषाएं बोलते हैं, 4.9 प्रतिशत लोग रूसी भाषा, 6.1 प्रतिशत लोग स्पेनिश,15.2 प्रतिशत लोग चीनी समूह की अलग-अलग भाषाएं और केवल 7.6 प्रतिशत लोग अंग्रेजी भाषा बोलते हैं। अतः अंग्रेजों के अनुसार भी जिस भाषा को 92.4 प्रतिशत लोग न तो समझ सकते हैं और न बोल सकते हैं, वह भाषा भला विश्वभाषा कैसे हो सकती है?

संसार में केवल 5 देशों की भाषा अंग्रेजी है और वे देश हैं ब्रिटेन, अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड। कनाडा में भी 51 प्रतिशत लोग अंग्रेजी भाषी हैं और 49 प्रतिशत लोग फ्रेंच भाषी हैं और यही कारण हे कि कनाडा में अंग्रेजी और फ्रेंच भाषाओं का विवाद इस हद तक बढ़ा कि बीते समय में कई बार भाषायी आधार पर इस देश का विभाजन होते-होते बचा है।

अगर ईमानदारी के साथ तथ्य आधारित अन्वेषण किया जाए तो हम यह कह पाएंगे कि संसार में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या संसार के अलग-अलग देशों में बोली जाने वाली भाषाओं को बोलने वाले लोगों की संख्या से कम नहीं है। सच्ची बात तो यह है कि जो देश किसी जमाने में अंग्रेजों के गुलाम थे, केवल उन्हीं देशों का 1 प्रतिशत संभ्रांत वर्ग ही अंग्रेजी बोलता है और अपने देश में इस अप्रचिलत भाषा के प्रयोग की बढ़-चढ़कर वकालत करता है।

हालांकि " Book of Facts" में हिन्दी भाषी जनता की संख्या 6.4 प्रतिशत मानी गई है लेकिन डा. राही मासूम रज़ा के अनुसार इसमें शायद जानबूझकर इस तथ्य की अनदेखी की गई है कि सारा पाकिस्तान हिन्दी बोलता है, केवल उस भाषा का वहाँ का नाम उर्दू है। यही नहीं, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान और नेपाल में भी हिन्दी बोली और समझी जाती है। सच तो यह भी है कि सूरीनाम, मारीशस और ट्रिनीडाड के निवासी उन प्रवासी भारतीयों की भाषा भी हिन्दी ही है जो 100-200 वर्ष पहले भारत से जाकर वहाँ बसे थे और इनकी जनसंख्या इन देशों की कुल जनसंख्या की लगभग 50 प्रतिशत तक है।

विजेता

अरूपम माइति
लेखा विभाग, हावड़ा

आखिरकार बारिश रूकी। सवेरे से रूकने का नाम ही नहीं ले रही थी। घर से बाहर आ कर, दूर गगन पर आंखें टिकाये हुए, जयिता चुपचाप बारामदे में खड़ी हो गई। पता नहीं क्या देख रही है? सचमुच कुछ देख रही है या कुछ सोच रही है, वो तो सिर्फ वही जानती है। लेकिन सोचने को तो बहुत कुछ है। आज वो आखिरी बार फुटबॉल खेलेगी। क्या वह, उसी बारे में सोच रही है? क्या बाबूजी की याद आ रही है? क्या राहुल को पता है कि आज जयिता आखिरी बार मैदान में उतरेगी? क्या वो आज भी, जयिता पर नाराज रहेंगे?

ऐसे कई सारे उलझनों में उलझे हुए, जयिता जब गहरी सोच में डुबी थी, तब उसे लगा, अंदर से माँ उसे कोई बुला रहा है। पहले दो-तीन बार तो बात सुनाई नहीं दिया, लेकिन फिर जब सुनाई दिया, तो दिल नहीं चाहता था कि वह उत्तर दे। आजकल मालती भी, जयिता को ले कर बहुत परेशान रहती थी। उनकी हर चीज, मालती को पसंद है, खाली एक चीज छोड़ कर। बोल-बोलकर थक गई, फिर भी उस चीज से जयिता को हटा नहीं पाई। क्या करे, कभी-कभी तो शक होती है कि उस चीज को लेकर, लड़की और उनके बीच दरार ना पड़ जाए।

क्या कर रही हो तुम इधर? जयिता पीछे मुड़कर देखी, माँ खड़ी है। वो अभी भी गहरी सोच से उभर नहीं पाई। मालती कुछ देर तक जयिता को देखी। उसकी हालत कुछ हद तक मालती की समझ में आई।

ऐसे तो खास कुछ नहीं। फिर भी काफी देर तक, तुम्हारी आवाज नहीं सुनी। जयिता इतनी ज्यादा सोच में डूबी हुई थी कि मां की बात का भी उसके ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ा। वो बोल उठी अगर खास कुछ नहीं है तो क्यों आप परेशान होकर इधर चली आई। बोलने के लिए, इसके अतिरिक्त मालती के पास कुछ नहीं था। वो कैसे बताती कि वो देखना चाहती थी कि जयिता किस हाल में है। ठीक है, मैं जा रही हूँ। अंदर घुसने के लिए मालती घर के दरवाजा तक पहुंची कि जयिता बोल उठी, बारिश बंद हो गई। मैं भी आधे घंटे में निकल जाऊंगी। आप शायद वो ही पूछने आई थी। क्या मैं ठीक बोल रही हूं? मालती चुप रही। उनकी जो देखना और जाननी था, वह तो हो गया। बात बढ़ा कर होगा क्या।

ठीक है, जो तुम उचित समझो। मालती और एक या दो कदम चली, जयिता फिर बोलने लगी, मां आज मेरा आखिरी फुटबॉल मैच है। तुम खुश हो ना। सुनकर मालती को लगा, शायद जयिता रोकर बोल रही है। वो तुरंत घूमी और देखी, जयिता की आँखें सचमुच पानी से भरी हुई थी। बेटी, तुम रो रही हो? नहीं, मैं क्यों रोऊंगी? मुझसे छुपा रही हो? साफ दिखाई दे रहा है, तुम्हारी आँख, पानी से भरा हुआ। वो कुछ नहीं। मां, तुम भी ना, क्या क्या देखती हो। आँख में आँसू नजर आया। खुशी नजर नहीं आई? अब मालती भी टूट पड़ी। वो भी, अपनी आँख पर आंसू आने को रोक नहीं पाई।

बेटी, तुम मेरे को गलत मत समझो। तुम्हारी भलाई चाहती हूँ। इसीलिए चाहती हूँ कि तुम फुटबॉल खेलना छोड़ दो। तुम्हारी इस खेल छुड़ाने को मेरी चाहत का मतलब कुछ नहीं है। तुम तो जानती हो फुटबॉल तुम्हारे बाबूजी को किस हालत पर पंहुचा दिया था।

जयिता, अपने को संभालते हुए, बोली मैं कुछ भुली नहीं हूं। सब कुछ मेरी याद में है। मैं उस समय छोटी थी। बाबूजी को जो भी हुआ था, सब मेरी आँथों के पीछे। लेकिन बड़े होने के बाद, जो तुम बतायी थी, पूरा का पूरा मेरे को याद है। बाते करते वक्त जयिता ने अपनी आँख, बिल्कुल साफ किया। चलो छोड़ो। जो बीत गया, वो दोहरा कर, होगा क्या। हाँ बेटी, तुम सही कह रही हो। चलो हम मां और बेटी मिलकर नई जिंदगी जियेंगे। फुटबॉल तुम छोड़ दो। तब जाकर हमलोगों की ये उम्मीद पूरी होगी।

मैं तो खेलना छोड़ रहीं हूँ। आज मेरी आखिरी मैच है। आखिरी बार, हँसकर मेरे को खेलने का अनुमति दे दो। मालती की मुंह पर हंसी लौट आई। जा बेटी, जा। आज

जी भर कर फुटबॉल खेल ले। मालती जब जयिता को ये सब बोल रही थी, तब मन ही मन, उनके अंदर से, एक बड़ा दुख उठकर बाहर की ओर आ रहा था। भगवान जाने, मैं कभी फुटबॉल के खिलाफ नहीं थी। अब भी याद है, जब जयिता पापा को खेलते हुए देखती थी, तो कितना आनंदित होती। वो जब सब को चकमा देकर, गोल बॉक्स पहुंच जाते, तब दिल धक-धक करना शुरु हो जाता। कभी खुद शॉट लेते, कभी दूसरे को पास करते। पूरा स्टेडियम, हर्षोल्लास से भर जाता। वो अच्छा खेलते थे। इसलिए उसके बहुत सारे फैन थे। सब चिल्लाना शुरू कर देते। वो एक जमाना था। फिर आई वो दुख भरी घड़ी। मालती को इतनी देर तक चुप रहते हुए देखकर, जयिता बोल उठी, माँ एक बार बताओ तो उस दिन क्या हुआ था। कितनी बार सुनी हूँ फिर सुनना चाहती हूँ। हाँ माँ, आज मेरी आखिरी मैच है। अब एक बार फिर सुन लेंगे तो अंदर ही अंदर कुछ होगी। आज मैं सबसे बढ़िया खेलना चाहती हूँ। पापा की वो याद, मुझे अंदर से जागाती है। फिर एक बार बोलो माँ। उस दिन भी आज की तरह, गगन में मेघा छाए हुए थे। पिछली रात से बारिश हो रही थी। रूकने का नाम ही नहीं ले रही थी। घास के नीचे पानी और गीली मिट्टी के कारण खेलना मुश्किल था। फिर मैच शुरू होने के सिर्फ दो घंटे पहले बारिश रूक गई। सबने मिल कर तय किया, खेल होगी। जितना हो सके, पानी सुखाने का कोशिश किया गया। मालती अचानक बोलना बंद कर दी। अब फिर वो दुखद कहानी बतानी पड़ेगी। जयिता भी जानती है, अब माँ क्या बोलने वाली है। छोड़ो माँ और बोलने की जरूरत नहीं है। मेरे लिए ये काफी है। मुझे आशीर्वाद दो कि मैं विजेता बनकर लौटूँ। जल्दी तैयार हो कर, जयिता मैच के लिए निकल पड़ी। मैदान पहुंचने तक, अनगिनत बार मोबाइल चेक किया और निराश हुई। नहीं, राहुल का कोई मैसेज आया नहीं। एक लम्बी श्वास छोड़ते हुए, मन ही मन बोली, इतना कोशिश किया, फिर भी राहुल को समझा नहीं पाई। फुटबॉल के लिए वो अभी तक मुझ पर खफा है। हम दोनों एक दूसरे से प्यार करते हैं। लेकिन हम दोनों की पसंद कितनी अलग है। वो क्रिकेट पसंद करता है और मैं फुटबॉल। मुझको रबीन्द्र संगीत अच्छा लगता है और वो सुनता है हिंदी गाना। हम दोनों के प्यार का कोई भविष्य नहीं। शायद भगवान भी यही चाहते हैं। काफी देर तक, जयिता मैदान पहुंच कर भी ऐसी बहुत सारी चीजें सोचते हुए, सीमा के बाहर खड़ी थी। जब नीति ने चिल्लाया, तब होश आया। अरे तुम बाहर क्यों? चलो, थोड़ा शरीर गर्म कर लेते हैं। हाँ, चलो।

आज का दिन, जयिता के लिए एक अजीब दिन है। पुरानी कितनी यादें आ रही है मन में। जयिता खेल के प्रति ध्यान देना चाहती है, लेकिन हर वक्त मन किसी और की तरफ खिंचा चला जा रहा है। बीच में एक बार कप्तान दीप्ति भी सुना कर गई। अरे, तुम होश में तो हो? ऐसे खेलोगी तो हमलोग मैच हार जाएंगे। तुम्हारा ध्यान कहां है? तबियत ठीक नहीं है क्या? जयिता क्या बोलेगी? बायां हाथ उठाकर, कप्तान को आश्वस्त किया। ऐसे में पहला हाफ निकल गया। मैच अभी तक बराबरी में है। नीति और कप्तान दीप्ति नजदीक आई। क्या बात है, जयिता? कुछ हुआ क्या? हम लोगों को अपना मानकर बोल सकती हो। जयिता भली भांति जानती है, वो खेल में बिल्कुल ध्यान नहीं दे पाई। किसी तरह उन दोनों को टालने के लिए बोली, क्या पता, क्यों आज बार-बार बाबूजी की याद आ रही है? तुम लोग निश्चिंत रहो, अगला हाफ मैं ठीक से खेलूंगी।

तुम्हारा अच्छा खेलना बहुत जरूरी है। दल तुम से उम्मीद रखता है। जयिता थोड़ी दूर चल पड़ी और अपने आप को कोसा। यह क्या हो रहा है मेरे साथ? आंख बंद करके बाबूजी को स्मरण किया। इसी में सेकेंड हाफ शुरु होने की सिटी बज गयी। जयिता थोड़ा बहुत अपने को संभाल लिया। खेल में थोड़ी-सी ज्यादा नियंत्रण दिखाई दे रही थी। विपक्ष भी बढ़िया खेल रही थी। उनके दो-चार खिलाड़ी अच्छा खेल रहे थे। डिफेंस तोड़ना मुश्किल हो रहा था। अब ज्यादा से ज्यादा पांच मिनट बाकी है, खेल समाप्त होने में। अरे नीति ने बहुत बढ़िया पास बढ़ाया। इस पास को तो गोल में बदलना ही होगा। जयिता अचानक महसूस किया, वो पहले जैसा फॉर्म में है। तुरंत गोल की तरफ भाग पड़ी। कप्तान दीप्ति पीछे से उठकर दाईं तरफ आ गई। जयिता की समझ में आया, जयिता आगे बढ़ो। इस चांस को गोल में बदलना होगा। ज्यादा

समय नहीं है। ऐसा मौका और नहीं आयेगा। जयिता पेनल्टी बॉक्स में घुस गई। गोल पोस्ट कुछ ही कदम दूर। गोलकीपर आगे आ रही है। बांये या दायें, किसी एक तरफ हिलकर उसके पास से गुजरनी होगी। उसके बाद एक ही काम रहता है। हल्के से एक टच में फुटबॉल को नेट तक पंहुचाना। एक काम तो बोलते-बोलते हो गया। जयिता ने गोलकीपर को पीछे छोड़ दिया। अब फुटबॉल को गोल में धकेलना बाकी। लेकिन विपक्ष की एक डिफेंडर जयिता के नजदीक आ गई। देखने से मालूम हो रहा था, उसकी नीयत ठीक नहीं। वो क्या करना चाहती है। अरे वो तो जयिता को फाउल किया। जयिता गिर रही है। बाबूजी.....।

अस्पताल में एक रात, लगभग बिना नींद गुजर गई। मालती की आंख में आंसू बह रहा है, लगातार सारे दिन-रात। जो डर था, वही हुआ। जयिता की हालत, उसकी पिता जैसी बन गई। आज दूसरा दिन है। जयिता धीरे से आंख खोली। बेड के एक तरफ माँ बैठी है। जयिता ने दूसरी तरफ आंखे फेरकर देखा। ये कौन खड़ा है? राहुल आया? तुम! हां, मैं। क्यों, मेरे को आना नहीं चाहिए था? नहीं, ऐसी बात नहीं। इसी दौरान डॉक्टर आ गई। अभी कैसी है मेरी बहादूर लड़की? लड़की फिर मैदान में उतरेगी कि नहीं? जयिता हाँ बोलते हुए रूक गई। डॉक्टर जयिता की तरफ देखते रह गयी।

क्या हुआ? रूक गईं? जयिता एक बार माँ की तरफ देखी तो एक बार राहुल की तरफ। दोनों ही चुपचाप थे फिर मालती और राहुल एक साथ बोल उठे, हमारी जयिता मैदान में फिर उतरेगी। वो फिर फुटबॉल खेलेगी। वो तो विजेता है, विजेता ही रहेगी।

बड़ी बात

पूर्णेन्दु शेखर सिन्हा
सहायक कल्याण अधिकारी
पूर्व रेलवे, लिलुआ

खुशियों के आलम में मुस्कुराना कोई बड़ी बात नहीं
दुखों के सागर में डूबकर भी मुस्कुराना बड़ी बात है।
किसी का सिन्दूर मिटा देना कोई बड़ी बात नहीं
किसी का सिन्दूर लूटने से बचाना बड़ी बात है।
खामोश निगाहों से इशारा करना कोई बड़ी बात नहीं
सबके रु-ब-रु अपना प्यार जताना बड़ी बात है।
किसी से एकरारे मोहब्बत करना कोई बड़ी बात नहीं
कयामत तक बस प्यार को निभाना बड़ी बात है।
किसी की राहों में फूल बिछाना कोई बड़ी बात नहीं
हमसफर की राहों में दिल बिछाना बड़ी बात है।
सिर्फ अपनों के लिए जान लुटाना कोई बड़ी बात नहीं
गैरों के लिए खुद को मिटाना बड़ी बात है।
बसी हुयी बस्तियाँ उजाड़ना कोई बड़ी बात नहीं
औरों के लिए आशियाना बनाना बड़ी बात है।

तितली

अजन्ता साहा
लेखा सहायक/स्थापना/हावड़ा

रंग-बिरंगी तितली एक उड़ती हुई अचानक
आ पड़ी मेरे कमरे में खुली खिड़की से
जैसे गुलाल एकमुट्ठी सफेद दीवार में
मन खुशी से भर उठा एक ही पल में।

जैसे इंद्रधनुष ने रंग बिखेरा मेरी चारों ओर
आकाश की विशालता चारों दीवार बीच
या कोई झरने शतरंगी छूं गई मेरा मन
झूम उठा मेरी उदास रुह जादुई परश से।

जैसे कुछ सुनहरी पंखुड़ियां गुलबागिचे से
उड़ आयौ मेरी अंगना पगली पवन से
तनहाई में दिल को छूं गया कोई रंगीला
रंगोली की रंग लगी मेरी तन बदन में।

हल्के हाथ से उड़ा दिया जन्नत की गुल को
लहर उठा कर उड़ गयी नीले आसमान पर
मैं भी खो गयी स्वप्नों की दुनियां में
मिट्टी की दुनियां छोड़ दूर निलीमा में।

उम्र और सेवा

राकेश रोशन
कार्यालय अधीक्षक, हावड़ा

समर्थ नौवीं कक्षा का तेरह वर्ष का छात्र था। वह एक संपन्न परिवार का लड़का था। उसके पिता एक सरकारी कर्मचारी तथा माता एक शिक्षिका थी। उसके दादाजी स्वतंत्रता सेनानी थे। यद्यपि उसके दादाजी का देहांत हो चुका था, परंतु उन्हीं का प्रभाव था कि घर में सभी सदस्य अनुशासन प्रिय थे। समर्थ के बचपन का अधिकाधिक समय अपने दादाजी के साथ ही गुजरा था। वह उनके विचारों से बहुत प्रभावित था।

वह अपने माता-पिता से भी बहुत प्रभावित था। वैसे तो परिवार के सभी सदस्य अपने-अपने काम में लगे रहते थे, परंतु वे तीनों सदस्य जब एक साथ होते थे तो आपस में अनेक विषयों पर चर्चा होती थी। इससे समर्थ के ज्ञान में वृद्धि होती थी।

जब भी समर्थ को कोई दुविधा होती थी तो वह उसे दूर करने के लिए समय का इंतजार करता था कि कोई समय मिले और वह अपनी दुविधा को माता-पिताजी के साथ उसे दूर कर सके।

एक छुट्टी का दिन था, परिवार के सभी सदस्य एक साथ थे और आपस में वार्तालाप कर रहे थे। समर्थ उम्र में छोटा था किंतु वह एक मेधावी छात्र था। वर्ग में वह हमेशा प्रथम स्थान लाता था। विद्यालय के सभी शिक्षकों व सहपाठियों का वो बड़ा ही प्रिय लगता था। सभी को विश्वास था कि वह एक दिन विद्यालय और समाज का नाम रौशन करेगा।

एक बार समर्थ ने अपने पिताजी से पूछा- 'पिताजी जैसे आपलोग पूरे सामर्थ के साथ समाज निर्माण में सहयोग कर रहे हैं, मैं भी उसी प्रकार कुछ करना चाहता हूँ और आपका व पूरे समाज का नाम रौशन करना चाहता हूँ।' पिताजी उसकी बातों से प्रभावित हुए, उन्होंने कहा कि इस विषय में मैं तुम्हारी हर संभव सहायता करूँगा। तुम्हारे जैसे प्रबुद्ध लोग ही समय के साथ सिद्धार्थ से 'बुद्ध' बनते हैं।

पिताजी ने समझाया- 'बेटे समाज का उत्थान समाज के लोगों के प्रयास से ही होता है, समाज एक बहुत बड़े परिवार का नाम है, जिस प्रकार हम अपने परिवार के उन्नति की कामना करते हैं, उसी प्रकार हमारा कर्तव्य समाज के प्रति भी है, हमें इस बात के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए कि समाज का कल्याण कैसे किया जा सकता है और इसमें हमारी भूमिका क्या हो सकती है?'

सदियों से हमारी परंपरा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की रही है, हमें अपने विचारों को शुद्ध रखना चाहिए, जीवन में कभी भी जाति, धर्म, क्षेत्र व भाषा के प्रति दुराग्रही नहीं होना चाहिए, समाज की विविधता ही उसकी खुबसुरती है, अतः हमें सभी का सम्मान करना चाहिए।

परंतु यदि तुम समाज को आगे बढ़ाने में योगदान देना चाहते हो, तो तुम्हारा प्रथम कर्तव्य शिक्षा के प्रति समर्पण होना चाहिए, जितनी अच्छी शिक्षा होगी, तुम्हारे द्वारा समाज कल्याण का कार्य भी उतने ही अच्छे से होगा और तुम्हें समय का सदुपयोग भी सीखना होगा।

यद्यपि पिताजी का उत्तर सुनकर समर्थ संतुष्ट था तथापि उसने माँ से पूछा- 'माँ क्या मैं इस उम्र में अपने समाज के लिए कुछ नहीं कर सकता हूँ?' माँ ने समर्थ का माथा चुमते हुए कहा- 'क्यों नहीं बेटे, तुम एक विचारवान विद्यार्थी हो, निःसंदेह तुम अभी भी बहुत कुछ कर सकते हो, जैसे मित्रों व सहयोगीजनों के सहयोग से साप्ताहिक वृक्षारोपण का कार्यक्रम कर सकते हो, प्रत्येक संध्या को विद्यालय विषयक गृह कार्य के लिए संगोष्ठी कर सकते हो, जो बच्चे आर्थिक रूप से कमजोर हैं, उन्हें ट्युशन दे सकते हो। यदि समय मिले तो आसपास के जीव-जंतुओं जैसे पक्षियों को पानी व गायों को खाना खिला सकते हो। इससे तुम्हें आत्मसंतुष्टि मिलेगी।

एक बात और है कि अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है, अतः सर्वप्रथम प्रत्येक व्यक्ति को अपने

उत्थान के बारे में सोचना चाहिए उसके बाद पास-पड़ोस समाज और फिर देश का ख्याल रखना चाहिए।

इस प्रकार समर्थ के मन की सारी दुविधा दूर हो गई। उसने मन ही मन में समाज के उत्थान के लिए संकल्प किया और मन में बहुत सारी योजनाएँ बनाई। माँ और पिताजी के सारे विचारों को आत्मसात करके उसने अपनी योजनाओं को आगे बढ़ाया।

उसने एक टीम बनाई और सामाजिक कार्यों के लिए सभी मित्रों एवं सुधिजनों से सहयोग मांगा। समर्थ के दोस्तों और परिवार वालों ने उसके विचार को खूब सराहा। इस प्रकार एक सामाजिक संस्था का जन्म हुआ जिसका नाम था 'नव निर्माण योजना।' संगठन में शक्ति होती है यह बात इस संगठन पर भी लागू हुई।

समर्थ ने अपने संगठन के साथ मिलकर सारे समाज के सुधार कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। उसकी मेहनत कुछ समय के बाद रंग लाई। आज उसके संगठन का नाम बहुत प्रख्यात है। उसके संगठन को सराहनीय कार्यों के लिए अनेकों बार पुरस्कृत किया गया है। उसका संगठन समाजिक उत्थान में नित नए आयाम जोड़ रहा है। किशोरवय अवस्था में ही समर्थ की फैन फॉलाइंग अच्छी हो गई है। आज वह सभी लोगों के लिए प्रेरणा और प्रशंसा का पात्र है।

अगर हिन्दुस्तान को सचमुच आगे बढ़ना है, तो चाहे कोई माने या न माने, राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है।

- राष्ट्रपति महात्मा गांधी

बूढ़ा जैसा चेहरा

नितेश कुमार सिंह
तकनीशियन-1 (यांत्रिक)
पूर्व रेलवे, बर्द्धमान डीजल शेड

बूढ़ा जैसा चेहरा मैं कहां पे छुपाऊं रे?
बूढ़ा जैसा चेहरा मैं कहां पे छुपाऊं रे?
लोग मुझे छुपछुपकर खिड़की से देखे
रोड पे निकलुं तो बच्चे मुझ पर हंसी का फुहारा फेके।
ना तू छत पर आती, ना मैं दिवाना होता
ना तू ढ़ेला मारती, ना मैं आज काना होता।

दर्दे दास्तां कैसे मैं सुनाऊं रे।
बूढ़ा जैसा चेहरा मैं कहां पे छुपाऊं रे
भरी जवानी में सर पर सफेदी का बढ़ रहा बोल बाला है
सर के काले केश का निरंतर निकल रहा दिवाला है
उम्मीदों की चमक दिन-प्रतिदिन होती जा रही है कम
इस गहरी चिंता में लगा रहता हूँ हरदम।

न जाने कितने दिन सर पे केशकिंग लगाऊं रे
बूढ़ा जैसा चेहरा मैं कहां पे छुपाऊं रे।
अब तो धीरे-धीरे सफेद केश भी होने लगी है साफ
भगवान अगर हमसे कोई गलती हुई हो तो कर दो हमें माफ।
बहुत खोजबीन सोच-विचार करने पर पता चला ये कहानी है
सर के इस टाकपन का हमारी पूर्वजों की निशानी है।
हे भगवान आपको खुश करने के लिए कौन-सा प्रसाद चढ़ाऊं मैं
बूढ़ा जैसा चेहरा मैं कहां पे छुपाऊं रे।

अगर किसी महानुभाव को कोई रास्ता हो तो दे दो सुझाव
ये बंदा हमेशा तैयार है खेलने के लिए हर दाव।
अगर रहा सफल मेरी जवानी वापसी का सुझाव कारगर
तो उस भाई साहब का ऐहसान न भुलूंगा जिंदगी भर।
अपने जवानी की वापसी के लिए किस पर भरोसा जताऊं रे,
बूढ़ा जैसा चेहरा मैं कहां पे छुपाऊं रे।

नारद और माया

ललित कुमार मालाकार
स्टेशन मास्टर/श्रीरामपुर, पूर्व रेलवे

एक सुंदर और जवान मुनि थे, जिनका नाम था नारद। वे भगवान के बड़े भक्त थे और वेद पुराणों के ज्ञाता थे। इन ग्रंथों का अध्ययन करते-करते उन्हें 'माया' शब्द दिखाई पड़ा जो इनकी समझ में नहीं आई। उन्होंने अध्ययन करते-करते मन ही मन सोचा कि यह माया क्या बला है? अंत में उन्होंने उस पुस्तक को जोर से बंद कर दिया, नहीं, मेरी समझ में नहीं आ रहा है मन ही मन कहा, और जब तक समझ नहीं आए तब तक मुझे चैन नहीं आएगा। उन्होंने कई पुस्तकें खोज डाली, कई ज्ञानियों से पूछा, पर संतोष नहीं हुआ। अब मैं क्या करूँ? मेरी कौन मदद करेगा? उन्होंने सोचा। फिर अचानक खड़े हो गए और बोले- मुझे मेरे प्रभु श्रीकृष्ण के पास जाना चाहिए, उन्हें अवश्य ही मालूम होगा।

वे तुरन्त द्वारिकापुरी की ओर चल पड़े जहाँ श्रीकृष्ण जी निवास करते थे। श्रीकृष्ण ने उन्हें गले लगाते हुए उनका हार्दिक स्वागत किया और बोला- नारद, तुमने बड़ा अच्छा किया पर वत्स क्या बात है? तुम कुछ बेचैन से लगते हो। हाँ प्रभु नारद ने बड़े ही विनम्र भाव से भगवान को साष्टांग प्रणाम करते हुए कहा - आपने मेरे मन की बात ठीक-ठीक जान ली। मैं आपके पास एक समस्या के समाधान के लिए आया हूँ। श्रीकृष्ण ने पूछा वह क्या नारद? नारद ने हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हुए कहा भगवन आप कृपया मुझे समझाएं और दिखाए कि माया क्या होती है? श्री कृष्ण जोर से हँस पड़े और बोले, बस क्या इतनी सी बात सता रही है पुत्र, चलो, तुम्हें यह पता चल जाएगा कि माया क्या होती है? पर अभी नहीं। तुम थक गए होगे, कुछ दिन आराम कर लो।

प्रभु आपकी संगति में रहना सौभाग्य की बात है, नारद बोले। कुछ दिन बीते, पर उन्हें अपने प्रश्न का उत्तर नहीं मिला। वह बेचैन होने लगे पर संकोच से श्रीकृष्ण को याद नहीं दिला पाए। एकदिन श्रीकृष्ण उन्हें साथ लिए दूर देश की यात्रा करने के लिए कहा। वे लोग प्रातःकाल ही निकल पड़े और कई कोश चलने के पश्चात श्रीकृष्ण बोले, नारद मुझे प्यास लगी है। क्या तुम मेरे लिए थोड़ा-सा पानी ला सकते हो? अभी लाया, कह कर नारद दौड़ पड़े। थोड़ी दूर पर एक गाँव था। उन्होंने एक कुटिया का दरवाजा खटखटाया और एक अत्यंत सुंदर कन्या ने दरवाजा खोला। वाह क्या दिव्य सुंदरता है। वे धीरे से बोले और उसे घूरने लगे। वह कन्या झेंप गयी और नजर नीची करती हुई अपनी मधुर स्वर में बोली, कृपया अंदर आइये, महाराज, मैं आपकी क्या सेवा कर सकती हूँ? नारद जी मोहित व्यक्ति की तरह भीतर आकर बैठ गए पर कुछ कह न सके। वे अपने आने का कारण ही भूल गए,यह भी भूल गए कि उनके स्वामी उनका इंतजार कर रहे हैं। वे सबकुछ भूल केवल एक ही ख्याल में खो गए। कैसी सुंदर कन्या है । यह हर हाल में मुझे मेरी पत्नी के रूप में मिलनी चाहिए, अन्यथा मेरा जीवन व्यर्थ है। कन्या ने कमरे से निकलकर अपने पिता को अंदर भेज दिया। सफेद दाढ़ी वाले उस वृद्ध आदमी ने नारद का स्वागत किया और कहा - पधारिए महाराज, मेरी कुटिया को पवित्र कीजिए। आपको अतिथि के रूप में पाकर धन्य हो गया। आप जब तक चाहें हमारे मेहमान बनकर हमारे साथ रहें। नारद को ऐसे निमंत्रण की कभी आशा ही नहीं थी और बड़े ही हर्ष के साथ उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया। उन्हें उस कन्या से बातचीत करने के कई मौके मिले और वे प्रतिदिन एक-दूसरे से वार्तालाप करते थे। बातों ही बातों में प्यार हो गया। एकदिन उन्होंने उससे पूछा, प्रिये क्या तुम मुझसे शादी करोगी? कन्या ने शर्माकर पैर के अंगूठे से जमीन कुरेदते हुए कहा, यदि मेरे पिता राजी हों तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है? एक शुभ दिन, शुभ मुहुर्त देखकर नारद का उस कन्या से विवाह हो गया। वे अत्यंत प्रसन्न हुए।

इसके पश्चात बारह वर्ष बीत गए। उनके श्वसुर का स्वर्गवास हो गया। नारद ने उनकी सम्पत्ति प्राप्त की, वे

अपनी जान में सुख-चैन का जीवन व्यतीत करने लगे। अचानक एक रात एक भयानक बाढ़ आई, बादल गरजे बिजली चमकी, मूसलाधार वर्षा हुई और सारा गाँव जलमग्न हो गया। नारद अपने बच्चों की चीख सुनकर जागे और बाहर का दृश्य देखकर उनका चेहरा उतर गया। अंत में नारद को बचाव के लिए वहाँ से भागना पड़ा। दो- चार कदम चलने के बाद से जूझते हुए अपने सभी बच्चे एवं पत्नी से अलग-थलग हो गए। इस प्रकार नारद घोर विलाप करने लगे। नारद ने कहा - हे भगवान, मैंने ऐसा क्या किया था जिसके कारण आपने मुझे यह सजा दी, नारद विलाप करते रहे।

इतने में पीछे से आवाज आई - मेरे बेटे, पानी कहाँ है? तुम तो मेरे लिए पानी लेने गए थे। तुम्हें गए तो आधे घण्टे से भी ज्यादा हो गए। नारद संभलकर बोले - प्रभु बारह वर्ष बीत गए और सबकुछ हो गया। श्रीकृष्ण मुस्कुराते हुए बोले - नारद मेरे पुत्र, तुम्हें माया का मतलब जानना था न, यही तो माया है।

शिक्षा : माया की शक्ति ऐसी है कि वह व्यक्ति के मन में जीवन के कर्म और उदेश्य को भूलने की लिप्सा भर देती है। मनुष्य को सदा सावधान और सतर्क रहना चाहिए।

राजभाषा अधिनियम 1963
यथा संशोधित 1967 की धारा 3(3)

1. सामान्य आदेश	General Orders
2. संकल्प	Resolution
3. परिपत्र	Circulars
4. नियम	Rules
5. प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन	Administrative or other reports
6. प्रेस विज्ञप्तियां	Press Release/Communiques
7. संविदाएं	Contracts
8. करार	Agreements
9. अनुज्ञप्तियां	Licences
10. निविदा प्रारुप	Tender Forms
11. अनुज्ञा पत्र	Permits
12. निविदा सूचनाएं	Tender Notices
13. अधिसूचनाएं	Notifications
14. संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र	Reports and documents to be laid before the Parliament

राजभाषा नियम, 1976 नियम 6 के अनुसार उपर्युक्त दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले का दायित्व होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों में तैयार किए जाएँ और जारी किए जाएँ।

श्री गुरु अर्जुन देव जी : तेरा कीआ मीठा लागै। हर नाम पदारथ नानक मांगै।

जगमोहन सिंह खोखर
भूतपूर्व तकनीशियन, संकेत एवं दूर संचार विभाग
पूर्व रेलवे, हावड़ा मंडल

परिचय : गुरु अर्जुन देव जी सिखों के पांचवें गुरु और शहीदों के सरताज एवं शक्तिपुंज हैं। गुरुग्रंथ सहिब जी के रूप में गुरु अर्जुन देव जी ने न केवल सिख जगत को वरन समुचे विश्व को एक अद्वितीय उपहार दिया है। सिखों के धर्मग्रंथ श्री गुरुग्रंथ साहिब जी में संख्या की दृष्टि से तीस रागों में गुरु अर्जुन देव जी की सर्वाधिक वाणी संकलित है। भाई गुरदास जी के सहयोग से गुरु अर्जुन देव जी ने गुरुग्रंथ साहिब जी का संपादन सन 1604 में किया। ग्रंथ सहिब में संकलित वाणियों का रागों के आधार पर किया गया वर्गीकरण गुरु अर्जुन देव जी की अद्वितीय संपादन क्षमता का प्रतीक है। मध्यकालीन धर्म ग्रंथों में ऐसी दूसरी मिसाल दुर्लभ है। गुरु अर्जुन देव जी ने ग्रंथ साहिब में 36 वणीकारों की वाणियां बिना किसी धार्मिक भेदभाव के समायोजित अपनी अपार सूझ-बूझ का परिचय दिया तथा इसमें उनकी विद्वत्ता और सर्व धर्म के प्रति उनके सम्मान की भी झलक मिलती है।

जीवन :अर्जुन देव जी का जन्म गोइंदवाल, पंजाब में 15 अप्रैल 1563 को हुआ था। उनके पिता गुरु रामदास जी, जो सिखों के चौथे गुरु भी हैं तथा माता भाणी जी थीं और वे उन दोनों की कनिष्ठ संतान थे। उनके दो बड़े भाई, पृथीचंद और महादेव थे। उन्होंने गुरमुखी भाषा और गुरवाणी की शिक्षा बाबा बुढ़ा जी से ली थी। अर्जुन देव जी संस्कृत, हिन्दी तथा फ़ारसी भाषा में भी पारंगत थे। उनका विवाह माता गंगा जी के साथ सन् 1579 में हुआ था। उनके पुत्र हरगोबिन्द जी थे, जो बाद में सिखों के छठे गुरु बने। 18 वर्ष की आयु में पिता गुरु रामदास जी ने 1 सितम्बर 1581 को उन्हें सिखों के पांचवें गुरु के रूप में गुरु गद्दी पर आसीन किया था। 16 जून 1606 ई. को अकथ, अकल्पनीय और असहनीय यातनाओं के लम्बे दौर के उपरांत तत्कालीन मुगल शासक जहांगीर ने गुरु अर्जुन देव जी को लाहौर में शहीद कर दिया था।

सूरज किरण मिले जल का जल हुआ राम।
ज्योति ज्योत रलि सम्पूरन थीआ राम।।

स्वभाव : अर्जुन देव जी का व्यक्तित्व मधुर तथा मुखर था। उनमें समर्पण तथा भक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। बचपन से ही अर्जुन देव जी ईश्वर के प्रेम में लिप्त रहते थे और सदैव ही प्रभु का गुणगान किया करते रहते थे।

गतिविधि : किसी भी एक धर्म को मानने वाले सभी व्यक्ति गलत नहीं होते, बल्कि उनमें से किसी एक द्वारा किये गये कर्म उसके व्यक्तिगत चित्र को उजागर करते हैं। गुरु अर्जुन देव जी इस धारणा के सबसे बड़े पालक के रूप में विख्यात हैं। इसका उदाहरण है उन्होंने श्री दरबार साहिब, जो श्री हरिमंदिर साहिब के नाम से भी विश्वविख्यात है और पवित्र नगरी अमृतसर, पंजाब में स्थित है, का शिलान्यास लाहौर शहर के एक विख्यात मुस्लिम पीर (संत) जिनका नाम हजरत मियां मीर था, के कर कमलों से दिसम्बर साल 1588 (प्रथम माघ विक्रमी संवत् 1644) को करवाया था। धार्मिक सहिष्णुता की इससे अच्छी और बड़ी मिसाल इतिहास में विरले ही देखने को मिलती है। गुरु अर्जुन देव जी ने दो महत्वपूर्ण पवित्र सरोवरों (जलाशयों) का निर्माण किया था। जिनमें से एक अमृतसर एवं दूसरा संतोखसर में स्थित है। गुरु अर्जुन देव जी ने गोइंदवाल साहिब के निकट तरन तारन सहिब शहर को भी बसाया था। सिख धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिये गुरुजी ने पांच वर्षों तक लगभग समुचे भारतवर्ष का भ्रमण किया। उपरांत गुरुजी ने वर्तमान जालन्धर शहर के निकट दोआबा कस्बे में करतारपुर नामक शहर को बसाया। इतना ही नहीं, गुरु अर्जुन देव जी ने एक और शहर, जिसका नाम हरगोबिन्दपुर है, को भी व्यास नदी के निकट स्थापित किया तथा अमृतसर से

कुछ ही मील की दूरी पर स्थित छेहाटा में खेती-बाड़ी में प्रयुक्त होनेवाले जल को उपलब्ध करवाने के लिये एक बहुत बड़े कुएं को भी निर्मित किया।

धर्म-कर्म : गुरु अर्जुन देव जी के काल में अमृतसर शहर सिखों के धार्मिक केन्द्र बिन्दु के रूप में उभर कर आया था। सिख बड़ी संख्या में वैसाखी के पवित्र उत्सव पर वहां उपस्थित होते थे। गुरुजी ने दसवन्द नामक एक नयी परंपरा चलाई जिसमें सिख अपनी कमाई का दसवां हिस्सा गुरुजी के राजकोष में जमा करवाते थे, जिसका उपयोग बाद में समाजिक उत्थान के विभिन्न कार्यों एवं धर्म के प्रचार में लगाया जाता था। दूरदराज के स्थानों से दसवन्द की समस्त राशि को एकत्रित कर सही सलामत राजकोष तक लाने के लिये गुरु अर्जुन देव जी ने अपने विश्वस्त धर्म चेलों जिन्हें मसान्द या गुरुजी के प्रतिनिधि भी कहा जाता था का उपयोग करते थे। यहां यह उल्लेख योग्य है कि मसान्द की परम्परा को सिखों के ही दसवें एवं अन्तिम गुरु, गुरु गोबिन्द सिंह जी ने विभिन्न कारणों से सन् 1698 में समाप्त कर दिया था, परन्तु दसवन्द की प्रथा आज भी कायम है।

सिख संगत धीरे-धीरे गुरु अर्जुन देव जी को सच्चा पातशाह कहकर सम्बोधित करने लगी थी। उनके अनुयायियों की संख्या में दिन दूना रात चौगुना इजाफा होने लगा था। कुछ रुढ़ीवादी हिन्दू तथा राजसी मुस्लिम गुरुघर से इर्ष्या करने लगे थे। सन् 1605 में सम्राट अकबर की मृत्यु के बाद कट्टरपंथी बादशाह जहांगीर तख्तपोश हुआ जो गुरुजी के सिख धर्म के प्रचार एवं चौतरफा प्रसार से कतई खुश नहीं था। दूसरी ओर अब रुढ़ीवादी हिन्दू और मुस्लिम लोगों ने भी आ-आकर जहांगीर के कान भरने शुरूकर दिये थे। बस फिर क्या था, जहांगीर ने मौके का फायदा उठाते हुए गुरु अर्जुन देव जी के विरोधियों की बात पर विश्वास करते हुए अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कड़ा रूख अपना लिया। उसने गुरुजी को गिरफ्तार कर लाहौर लाने का हुक्म जारी कर दिया। कुछ इतिहासकारों के मतानुसार बादशाह जहांगीर की गुरु जी के प्रति नाराजगी का एक कारण शहजादा खुसरो को शरण देना भी था।

गुरु अर्जुन देव जी को 15 मई 1606 ई. को सपरिवार गिरफ्तार करके लाहौर लाया गया था और वहां लाहौर के वजीर को जहांगीर ने मृत्युदण्ड की सजा देने का आदेश दे डाला था।

शहीदी : गुरु अर्जुन देव जी के ऊपर यातनाओं का न थमनेवाला दौर आरम्भ हो गया। लाहौर के वजीर ने गुरुजी को मनमाने कष्ट देने के उद्देश्य से उन्हें चन्दू नामक एक रुढ़ीवादी से व्यवसायी के सुपुर्द कर दिया था। कहा जाता है कि चन्दू ने गुरुजी को तीन दिनों तक अकथ, अकल्पनीय और असहनीय यातनाएं दीं जिसका बयान तो दूर की बात है, जिसकी कल्पना मात्र से भय से कंपकपी छूटने लगती है। इतिहास में इसकी ऐसी कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती है। यातनाओं के दौरान गुरु अर्जुन देव जी को गर्म तवे पर बैठाया गया। इसपर भी जब चन्दू का मन नहीं भरा तो उसने गुरु जी के सर तथा नग्न शरीर पर गर्म रेत गिरा दी थी।

ज्येष्ठ का महीना गर्म था। बादशाह जहांगीर गर्म था। लाहौर का वजीर गर्म था। चन्दू व्यवसायी गर्म था। अंगीठी में धू-धू कर जलती आग गर्म थी। उस पर रखा लोहे का तवा भी गर्म था। गुरु जी के शरीर पर डाला जानेवाला बालू गर्म था और इतना कुछ होने के पश्चात भी, केवल मात्र गुरु अर्जुन देव जी ठण्डे शान्त बैठे थे मानों राजसिंहासन पर आसीन हों। वे तनिक भी विचलित नहीं हुए थे। उन्हें किंचित मात्र भी क्रोध नहीं आया था। उनके शान्त व शीतल स्वभाव के समक्ष तपता तवा सुखदाई बन गया था। तपती रेत भी उनकी निष्ठा भंग नहीं कर पायी थी। सहनशीलता की पराकाष्ठा को गुरु अर्जुन देव जी सहजता से पार कर गये थे। गुरु अर्जुन देव जी के शरीर पर छाले निकल आये थे। ऐसी अवस्था में भी उन जालिमों ने गुरु जी को लोहे की जंजीरों में बांधकर 30 मई 1606 ई. को रावी नदी में फेंक दिया था। गुरु अर्जुन देव जी अन्त तक प्रत्येक कष्ट को हंसते-हंसते झेलते रहे और उन्होंने अरदास की- तेरा कीआ मीठा लागै। हर नाम पदारथ नानक मांगै।

अवदान : गुरुअर्जुन देव जी की शहादत ने सिख समुदाय को झंकझोर कर रख दिया था। शांतिपूर्वक धर्म प्रचार व प्रसार के गुरुजी के तरीके को बदलने का बीजरोपण उसी दिन हो गया था। सिखों के दसवें गुरु,

गुरु गोबिन्द सिंह जी के समय में जिसने खालसा के रूप में जन्म लिया था और जिसके हाथों में शमशीर या तलवार थी यह खालसा रूपी सिख, अन्यायियों के समक्ष लाचार या कमजोर नहीं था। वह अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध एक तूफान-सा था जिसके सामने अधर्म का टिकना लगभग असंभव था। इसके साथ ही वह ईश्वर में पूर्ण विश्वास करने वाला तथा कमजोर तथा अबलाओं की हर सम्भव रक्षा करने वाला संत सिपाही था। गुरु अर्जुन देव जी ने न केवल सिखों को अपितु पंजाबी संस्कृति एवं साहित्य को श्री गुरुग्रंथ साहिब जी के रूप में एक ऐसी अनुठी भेंट दी है, जिसकी कीमत केवल मात्र शब्दों में वर्णित नहीं की जा सकती है। सुखमनी साहिब सिखों द्वारा पढ़ी जानेवाली गुरुजी की सबसे लोकप्रिय रचना है। सुखमनी साहिब मानसिक तनाव कम करने वाली गुरुवाणी है। सुखमनी साहिब अन्तःकरण को आनंद देने वाली वाणी है। सुखमनी साहिब हृदय का शुद्धिकरण करने वाली वाणी है। सुखमनी साहिब मानव को अपार सुखों की उपलब्धि करवाने वाली वाणी है। सुखमनी साहिब राग गउड़ी में रचित चौबीस अष्टपदियों वाली वाणी है। सुखमनी साहिब को सुखों की मणि भी कहा जाता है

सुखमनी सुख अमृत प्रभ नामु।
भगत जना के मन बिसरामु।।

उपसंहार : गुरु अर्जुन देव जी के शहीदी दिवस पर सिख समुदाय द्वारा बड़ी ही श्रद्धा और प्यार के साथ न केवल सारे देश में बल्कि विश्व में जहां कहीं भी वे बसते हैं, ठण्डे-मीठे जल के प्याउ जगह-जगह पर लगते हैं और जन सधारण को प्यार और सत्कार के साथ पिलाते हैं, चूंकि उस समय मौसम गर्मी का होता है और गुरु जी ने गर्म तसीहे झेले थे।

जिंदगी को यूं जाया न कर

मनोज कुमार प्रसाद
वरिष्ठ सहायक लोको पायलट/बिजली /हावड़ा

अपनी जिंदगी को फूलों से सजाया न कर।
मेहनत कर,
आगे बढ़
चुभन को बचाया न कर।
जीवन तो है अस्थायी,
मोहलत कहाँ देती है,
पर छोड़ती आस जीवन कभी नहीं,
हमें यूँ जाया न कर।
तेरी राह की मुश्किलों को,
कहाँ लोग समझते यहाँ,
जो आसमां मिला, बेशुमार चुनौतियों के बाद,
उसे यूँ गवायां न कर।
सच का रूप उत्कृष्ट,
झूठ का वीभत्स और रंग है फूहड़।
अपनी मर्यादा का ख्याल कर,
उसे बर्बर फूहड़पन से भुनाया न कर।

मेढ़क

मनोज कुमार राय
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
वरि. मं. इंजी. (समन्वय), हावड़ा

उस कराल काल सम मेढ़क को देखो,
अपने भाई-बन्धुओं का सबसे बड़ा रक्षी।
वह है अनुभवी, अपनी कूपमंडूकता का
एकमात्र अग्रणी, कुएं में खिलते आकाश का साक्षी।
वह रहता है, सुनसान बियाबान पोखर में,
खोजता है मुक्ति अपनी केवल सुरक्षा का।
कम नहीं हम और आप,
जरा अपने को देखें।
बरसात की अंधेरी रात,
देखकर होता है खुश।
अंधकार की गहनता में,
खोलता मुख कर्कश।
दिन में वह स्नान-ध्यान से होता है निवृत्त,
रात्रि समय भोजन कर होता है जाग्रत।
मानव समाज एक विस्तृत है कूपगर्त
आपस में अर्थ की लगातार रहता है शर्त।

राम लला - निहाल अयोध्या

अशोक कुमार पाण्डेय
सेवानिवृत्त वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
मेट्रो रेलवे, कोलकाता

दिन सोमवार तिथि 22 जनवरी 2024। यही वह तिथि थी जिसकी हर देशवासी प्रतिक्षा कर रहा था। और जब वह तिथि आई तो देश राममय दिखा। ऐसा लगा दीपोत्सव आ गया है। पग-पग पर अयोध्या-सा उल्लास नजर आ रहा था और रामभक्तों का उत्साह कण-कण में श्रीराम के प्रतिबिंब की अनुभूति करा रहा था। देशभर के मंदिरों में रामायण, सुंदरकांड और हनुमान चालिसा के पाठ के साथ विशेष आरती का भव्य आयोजन देखने का दुर्लभ अनुभव प्राप्त हुआ। फूलों से सजे मंदिरों में मानस की चौपाईया गूंजती रही। आयोजित भंडारे में यूँ लगा जैसे माता अन्नपूर्णश्वरी अपने दोनों हाथों से अन्न-प्रसाद लूटा रही हैं। गंगा के घाटों पर सजे राम दरबार, दीपों की कतार और आतिशबाजी की फुहार देव-दीपावली को मात देती नजर आ रही थी।

श्रीराम कहीं आजे-जाते नहीं हैं। वह शाश्वत सनातन-नित्य नूतन है। भक्तों के ह्रदय में है, जो शबरी की तरह युगों तक प्रतिक्षा कर सकते हैं और कभी कदाचित भी राम अव्यक्त से व्यक्त होते हैं। 22 जनवरी को ऐसा भी दुर्लभ अवसर था जब अयोध्या के नवनिर्मित मंदिर के गर्भगृह में प्राण प्रतिष्ठा के साथ रामलला की आँखों पर बंधी पट्टी खुली। बोलती आँखें उन लोगों को आश्वस्त कर रही थी जो आवाज के असर के लिए आकुल होते हैं। चिर स्वप्न साकार करने वाले नवनिर्मित मंदिर के अनुरूप रामलला की प्रतिमा का निर्माण आसान नहीं था पर दैवकृपा से मूर्तिकार अरूण योगीराज ने ऐसा कर दिखाया। श्यामवर्णी रामलला मनोहारी वस्त्रों, विविध श्रृंगार के अलौकिक आभा से विभूषित दिख रहे थे। घुंघराले केशों के ऊपर मुकुट चमक रहा था। आस्था के अतिरिक्त कला की दृष्टि से भी यह रोचक है। एक ओर प्रतिमा की जीवंतता देने वाली केशों की लट का सूक्ष्म अंकन तो दूसरी ओर मुकुट। माथे पर रामानंदीय तिलक, कानों में कुंडल, मुक्ताहार बाजूबंद, करधन, पैजनिया, रेशमी पीतांबरी से सज्जित होकर रामलला भक्तों के और करीब प्रतित होते हैं। सार्थक हुआ सुविचारित ऊँचाई का प्रयास जिसके फलस्वरूप भक्तों को रामलला का दर्शन स्पष्टता से हो रहा है।

यह अवसर उत्सवता के साथ ही भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण था। हमारे देश ने इतिहास के इस कठिन गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता से खोला है वह इस बात की ओर इंगित करता है कि हमारा भविष्य अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है। पूर्ण हो गई पांच सदी की प्रतिक्षा और प्रतिज्ञा। सदियों के अभूतपूर्व धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या के उपरांत अपनी जन्मभूमि पर बने भव्य और दिव्य घर में विराजमान हो गये रामलला। अद्‌भूत, अभूतपूर्व, अविस्मरणीय और भाव विह्वल कर देने वाला दिवस 22 जनवरी 2024।

पर्यटन की कुछ यादें

कामेश्वर पाण्डेय
सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी
हावड़ा मंडल, पूर्व रेलवे

देशाटन और पर्यटन एक ही चीज है। मनुष्य के जीवन में इसका सर्वाधिक महत्व रहता है। आदमी देशाटन यानी पर्यटन के माध्यम से अपने देश या विदेश की यात्रा कर वहां की विभिन्न बोलियों एवं संस्कृतियों से वाकिफ होता है। विदेश की कौन कहे हम लोग अभी भी सम्पूर्ण भारत की संस्कृति से अनभिज्ञ हैं। भारत अनेकता में एकता वाला देश है लेकिन क्षेत्रवार रूप से आकलन करने पर ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा रहन-सहन, खान-पान आदि भिन्न-भिन्न है। इसकी विस्तृत जानकारी एवं रहस्यात्मक परिबोध के लिए पर्यटन एक खास महत्व रखता है।

आइये। मैं अपनी पर्यटन से संबंधी कुछ वृतान्त आपसे शेयर करें ताकि हमारा अपना विशेष अनुभव आप तक पूर्ण रूप से सम्प्रेषित हो सके। इतिहास के पन्नों से राजस्थान के राजे रजवाड़ों की कहानी तो मैंने जरूर सुनी थी लेकिन बड़ी उत्सुकता थी कि एक बार जैसलमेर किला का दर्शन अवश्य करूँ और वह साध मेरी पूरी भी हो गयी। फरवरी 2010 में मैं अपने पूरे परिवार के साथ जोधपुर पहुँचा। दो-तीन दिन रहकर जोधपुर किला एवं उमेद भवन आदि का दर्शनकर रात की गाड़ी से जोधपुर से जैसलमेर के लिए रवाना हुआ। सुबह करीब 5 बजे जैसलमेर उतरा। प्लेटफॉर्म पर भीड़ भाड़ कम थी। प्रायः पर्यटक ही उस गाड़ी से उतरे थे। सहायक स्टेशन मास्टर से जब मैंने अपना परिचय दिया तो बड़ी आवभगत की उसने। उसी के कक्ष में सामान रखकर मैं बाहर निकला। चाय पीने की उत्कट इच्छा हो रही थी। सुबह का समय था, अभी कोई अच्छा रेस्टोरेन्ट खुला नहीं था। इसी कारण मुझे फुटपाथी चाय का ही आनन्द लेना पड़ा। चाय बहुत अच्छी और मजेदार थी। चाय से अधिक उस तरुण युवक के मनमोहक व्यवहार ने हम लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। बातों ही बातों में मैंने उससे ठहरने के होटल के बारे में पूछा। उसने एक व्यक्ति का फोन नंबर दिया। उससे बात करने पर मुझे दो कमरे मिले। चूंकि हम सात सदस्य थे तो दो कमरा लाजिमी था। उसने तुरंत अपनी एक गाड़ी (टाटा सुमो) भेज दी और कुछ देर के बाद हम लोग चल पड़े। कमरा बड़ा सुन्दर और साफ-सुथरा था। सुबह जल्दी-जल्दी तैयार होकर पहले जैसलमेर किला देखने गये। किले के बारे में मेरी जो अवधारणा थी वह काफी हद तक धूल धूसरित हो गयी। किले के नाम पर केवल 25 प्रतिशत स्थान ही सुरक्षित था बाकी 75 प्रतिशत भाग आवासीय रूप में परिवर्तित हो चुका था। किले के अन्दर एक जैन मंदिर भी थी। उसका भी हम लोगों ने दर्शन किया। बाहर मैं कुछ राजस्थानी लिवास में सजी कुछ औरतें छांछ बेच रही थी। बड़े-बड़े मटके में रखे छांछ का आनन्द हम लोगों ने लिया। छांछ से ज्यादा उनकी आवाज में भी मिठास थी। भाषा तो क्षेत्रीय थी इसलिए समझने में कुछ कठिनाई हो रही थी। लेकिन उनके व्यवहार का मैं कायल हो गया। एक बात आप से गौर करेंगे। औरतें कहीं की हों और किसी भाषा की हो एक दूसरे के काफी समीप हो जाती हैं। मेरी पत्नी उसकी भाषा तो नहीं समझ रही थी लेकिन घंटों उसके बारे में तहकीकात करती रहीं। वहां से आकर हम लोगों ने विशुद्ध शाकाहारी भोजन किया एवं आराम किया।

दूसरे दिन सुबह हम लोग जैसलमेर के रेगिस्तान क्षेत्र की ओर चल दिये। मेरी बेटी को ऊँट की सवारी करने की प्रबल इच्छा थी जिस टूरिस्ट बस में हम लोग सवार हुए उसमें एक जोड़ा (पति-पत्नी) इटली का था। पूरी यात्रा मेरी बेटी उन लोगों से भारतीय संस्कृति और राजस्थान के इतिहास पर चर्चा करती रही। उन स्थानों को देखकर मेरी बेटी बोली पापा यह वही स्थान है जहां 'सरफरोश' पिक्चर की शूटिंग हुई थी। मैं भी सुनकर बड़ा खुश हुआ। मुख्य शहर से वह रेगिस्तानी क्षेत्र काफी दूर था। वहां पहुँचकर हम लोगों ने पांच ऊँट भाड़े पर लिये। हम सभी लोगों का सफारी का पहला अनुभव था। मेरी पत्नी तो पहले बैठना नहीं चाहती थी लेकिन बाद में हम लोगों के साहस के बल पर उन्होंने भी ऊँट की सवारी (सफारी) करनी स्वीकार कर ली। पांचों ऊँटों को रेतीले रास्तों से उसका मालिक ले चल रहा था। सभी की आयु 15-20 वर्ष की थी। वे सभी हमें बालु का राशि के ढेर

के बारे में बताते चल रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था कि हम लोग मूल रेगिस्तान की यात्रा कर रहे हैं।

जब सूरज ढलने लगा तो सूर्यास्त का दृश्य बड़ा मन मोहक लग रहा था। पूरी यात्रा में सूर्यास्त का दृश्य ऐसा लगता था कि सूरज के ढलने का स्थान बालुका राशि के ठीक नीचे है। चारों तरफ बालू का ही साम्राज्य था। वहां की दुनिया ही अलग थी, कोलाहल पूर्ण वातावरण से बिलकुल दूर, बिलकुल शान्त। ऐसा लगता था हम लोग एक दूसरे देश में आ गये हैं। लौटने वक्त शाम हो गयी थी, अतः सूनी सड़कों पर भय जैसा लगता था लेकिन चूंकि सभी वाहन टूरिस्ट ठेकेदारों के थे, अतः सुरक्षा की पूरी गारंटी थी। इसके बावजूद भी भय बना रहता था क्योंकि हम सभी उस इलाके के बारे में अनभिज्ञ थे। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि रेगिस्तानी इलाके से शहर की दूरी करीब 50 कि.मी. की थी। बीच में न कोई बाजार न कोई मन्दिर और न कोई आश्रम जहां आदमी रूक सके। ड्राइवर अपनी पूरी गति से चलाता करीब 2 घंटे में 8.30 बजे रात को हम लोगों को होटल में छोड़ा। पूरी यात्रा वृतान्त काफी रोमांचकारी रहा। रात को भोजनोपरान्त हम लोग विश्राम किये। सुबह जल्दी-जल्दी तैयार होकर हम लोग एक और मंदिर देखने गये। मंदिर में गेट पर बड़ी-बड़ी मूंछों एवं पगड़ी वाले दरबान खड़े थे जो लोगों को एक क्यू में करते जाते थे। फूल-माला और प्रसाद खरीदकर हम लोगों ने भी देवी का दर्शन किया। वहां के लोगों ने बताया कि इस देवी (प्राचीन) के मन्दिर का दर्शन करके ही महाराज किसी जंग के लिए निकलते थे और फतह करके ही आते थे। देवी के प्रधान को हम लोगों ने भी नमन किया। बाहर आते-आते शाम हो गयी। हम लोगों ने अपना सामान बांधा और रात वाली गाड़ी से वापस जोधपुर आ गये। वहां से जोधपुर हावड़ा एक्सप्रेस से वापस आ गये।

हम लोगों की पूरी यात्रा अत्यन्त रोमांचकारी रही और हम लोग यात्रा के दौरान अविस्मरणीय क्षणों को याद कर महीनों चर्चा करते रहे। ऐसी सुखद एवं सुहानी यात्रा सबको नसीब हो।

रेलगाड़ी में अर्ध आरक्षण

मुन्ना सिंह
सेवानिवृत्त वरिष्ठ अनुवादक
आद्रा मंडल, दक्षिण पूर्व रेलवे

जी, मैं आरएसी या प्रतीक्षा सूची की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं बात कर रहा हूँ पैसेंजर ट्रेनों या इंटरसिटी टाइप की रेलगाड़ियों के अनारक्षित डिब्बों की। इन डिब्बों में शायिका होती नहीं और सीट के आरक्षण की व्यवस्था भी नहीं है।

तो वाकया यूं है कि अपने बबलू भाई को सपरिवार जाना था, और जहां जाना था वहां का निकटतम रेलवे स्टेशन एक छोटा स्टेशन था जहां कोई मेल एक्सप्रेस रेलगाड़ी नहीं रुकती थी। पैसेंजर ट्रेन में बहुत भीड़ होती थी और अपने बबलू भाई को सपरिवार जाना था।

उनकी भाग्यवान के मन में यात्रा और भ्रमण की कल्पना जितना उत्साह भर रही थी, उसकी तुलना में यात्रा की तैयारी का श्रम किसी गिनती में नहीं आ रहा था। हर तरह की व्यवस्था पहले ही की जा रही थी। मिसेज बबलू भाई और उनके बच्चे दिन भर में कई बार मीटिंग कर रहे थे और उधर अपने बबलू भाई अपने जान-पहचान वालों से जानकारियां ले रहे थे और शाम को जब अपने बबलू भाई घर लौटते तो स्वल्पाहार सह चाय आदि के साथ ग्रेंड मीटिंग हो रही थी। यह सिलसिला पिछले कुछ दिनों से चल रहा था। कहां कब क्या करना है, ये सारी बातें रोज लगभग तय हो जाती थीं लेकिन रोज ही किसी न किसी बिंदु पर योजना में कुछ परिवर्तन हो रहा था। इन कुछ दिनों में योजना में बहुत कुछ परिवर्तित हो चुका था, क्योंकि अपने बबलू भाई को सपरिवार जाना था।

यहां योजना के कार्यरूप में परिणत होने के आरंभ तक परिवर्तन के महत्वपूर्ण बिंदुओं का संक्षेप में वर्णन करना समीचीन होगा। पहले तो एक दिन दोपहर में साढ़ू भाई ने निमंत्रण दिया था। तब अपनी चादर की पसार का आकलन करते हुए विनम्रतापूर्वक क्षमा मांग ली गई थी। शाम को जब बबलू भाई आवास पहुंचे तो मोबाइल फिर बजा और साढ़ू भाई की श्रीमती जी ने स्विप जारी किया तो यह उत्तर

दिया गया कि आने की पूरी कोशिश की जाएगी। अब तक योजना में बच्चों का पदार्पण नहीं हुआ था।

बबलू जी की पत्नी अपनी बहन के घर जाना चाहती थीं। इससे एकरसता टूटती, लेकिन बजट गड़बड़ा जाता इसलिए चुप रही। बबलू जी भी पत्नी की एकरसता तोड़ने के लिए जाना चाहते थे लेकिन समझते थे कि बजट गड़बड़ा जाएगा। बजट और एकरसता के बीच शायद कोई दुरभिसंधि थी, जो बबलू जी और उनकी पत्नी को प्रस्ताव के समर्थन की पहल से रोक रही थी। पति-पत्नी के बीच लगभग घंटा भर रहस्यमयी चुप्पी चहलकदमी होती रही। बबलू जी की पत्नी समझती थी कि पैसे कमाना बहुत टेढ़ी खीर है इसलिए चुप ही रही।

आखिर बबलू जी ने हिम्मत दिखाई और वह कह दिया जिससे बबलू जी की पत्नी ही नहीं बच्चे भी खुशी से आपादमस्तक भींग गये। जाने की घोषणा से परिवार में वैसी ही खुशी मिली जैसी केन्द्रीय कर्मचारियों को मंहगाई भत्ता में वृद्धि की घोषणा से मिलती है।

इस भ्रमण का बजट अब भी परिभाषित, परिसीमित नहीं था क्योंकि जाने-आने का किराया, उपहार, सलामी, अन्य व्यय और आकस्मिक व्यय की कोई रूपरेखा तय नहीं हुई थी।

घर में खुशियां दोनों बच्चों में मानवीकृत होकर कोने-कोने में कूदने लगी थीं। एक बोझिल शाम ढलते-ढलते अचानक खुशनुमा हो गई थी। चूंकि जहां जाना था, उसके निकटतम स्थित रेलवे स्टेशन पर केवल कुछ पैसेंजर ट्रेन ही रुकती थी, और वहां से कोई सड़क वाहन रिजर्व करके ही जाना होता, इसलिए तय पाया कि अपने आवास से संबंधी के घर तक जाने के लिए कार किराए पर ले ली जाए। अगले दिन बबलू जी दफ्तर पहुंचे तो मित्रों से कार के बारे में चर्चा हुई। दिन भर में कुछ फोन करने के बाद ज्ञात हुआ कि जाने का किराया छह हजार रुपए होगा। बबलू जी परेशान कि जाने-आने का ही बारह हजार अभी बाकी खर्च बाकी ही हैं। मन मारे शाम को घर पहुंचे।

इधर बबलू जी की श्रीमती जी ने दिन में आराम का बलिदान कर रास्ते में खाने के लिए मठरियां ही नहीं बनाई, मठरियों के साथ-साथ मन ही मन आगे और भी बहुत कुछ बनाने की योजना बनाई। तब तक शाम हो चुकी थी और बबलू भाई दफ्तर से घर लौटे। पत्नी ने बबलू जी का मुंह दरवाजे पर लटके ताले जैसा निराशा भरा पाया। और जैसा कि पुराने किस्सों में होता था कि पत्नी के बार-बार पूछने पर पति अपनी चिंता का कारण बताता था और पत्नी उपाय सुझाती थी और समस्या हल हो जाती थी, वैसा ही हुआ। तय पाया गया कि प्रारंभिक स्टेशन से गंतव्य स्टेशन तक रेलगाड़ी से, उसके बाद शटल आटो या टोटो से और उसके बाद संबंधी के गांव की मुख्य सड़क से उनके घर तक संबंधी के परिजनों के साथ पैदल जाना होगा। कष्ट तो था लेकिन बजट और एकरसता की दुरभिसंधि पर सार्थक प्रहार था। प्रस्ताव पारित।

अब यात्रा के इस नवीन आयाम ने यह दबाव बनाया कि सामान कम से कम हो, हल्का हो, न कम हो न अनावश्यक हो आदि आदि। रास्ते में भूख भी लग सकती थी। बच्चों को, बच्चों को क्या, बड़ों को भी ट्रेन में बिकने वाले सामान खाने की इच्छा होती है, इसलिए आपातकाल में ही उपयोग के लिए बिस्कुट और थोड़ी मठरियां और दो बोतल पीने का पानी घर से लेकर जाना और आवश्यकता के अनुसार ट्रेन में खरीद कर खाना तय पाया गया। एक विचारणीय बिंदु यह भी था कि ट्रेन सात स्टेशन पहले बनकर खुलती थी। इस बीच पूरी तरह भर जाती है। आरक्षण की व्यवस्था नहीं थी। ऐसे में इतनी दूर खड़े-खड़े जाना कष्टकारी था। बबलू जी अकेले तो चले भी जाएं, पर पत्नी और बच्चे। खैर, समस्या कल पर टली और अगले दिन दफ्तर में चर्चा का विषय बनी। दिन भर चर्चा के बाद भी आश्वस्त होने लायक कोई समाधान नहीं मिला। इसी तरह दो दिन और बीते। बबलू भाई ने मन बना लिया कि सात स्टेशन पीछे जाकर ही यात्रा आरंभ करेंगे। यह विकल्प दफ्तर में मिले विकल्पों में से एक था।

इस बीच किसके लिए क्या उपहार ले जाना है, इस विषय पर चिंतन और कार्यान्वयन जारी रहा। जाहिर है, बजट हर कदम पर साथ था। इसी क्रम में जब कपड़ों की दूकान पर काउंटर पर बैठे व्यक्ति ने कुछ और कपड़े बेच लेने की नीयत से अपनी व्यापार कला का निकटता प्रदर्शित करने का प्रक्षेपास्त्र दागा तो बबलू जी ने ट्रेन में भीड़ की समस्या को निकट खड़ा कर दिया। समाधान का रेशा उसी कपड़े की दूकान के अंदर मिला। दूकान का एक कर्मचारी उसी ट्रेन के प्रारंभिक स्टेशन से रोज कुछ लोगों के साथ आता था, जिनमें से कुछ लोग आगे उतरते थे। कोई दो स्टेशन कोई कुछ और दूर। कपड़े समेटते-समेटते उसने चार सीट छेक रखने का आश्वासन दिया। बाद को किसी ने बबलू भाई को बताया कि वह नागा बहुत करता है। उसी दिन काम पर नहीं आया तो।

बबलू भाई न चाहकर भी उस दूकान पर कई बार गए। उस पर भरोसा तो नहीं हो पा रहा था, फिर भी जब-जब वह विश्वास दिलाता था, तब-तब चेहरे पर निश्चिंतता का भाव जबरिया लाना पड़ता था, मुस्कराने का प्रयास करना पड़ता था। यह अलग बात है कि शंकित मन मुस्कान को प्रकट होने से रोकता था। आश्वस्त हुआ प्रकट करने की अनचाही मजबूर कोशिश में होंठ जरा-सा ही फैलते और अपने बबलू भाई के मन की शंका प्रकट हो जाती और बबलू भाई को दिलासा का एक और डोज मिलता। यात्रा दिवस की पूर्वसंध्या के अवसर पर उसने बबलू भाई को प्लेटफार्म का वह स्थान बताया जहां बबलू भाई को उपस्थित रहना था। यूं ही बीत गए पलछिन और आ ही गया वह दिन जब बबलू भाई को सपरिवार जाना था।

तो यथानिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार बबलू भाई मय सामान मतलब एक पहिया दार सूटकेस एक बगल में लटकाने वाला बैग दो हेंडबैग दो बच्चों और इकलौती पत्नी सहित प्लेटफार्म के पूर्व निर्धारित स्थान पर समय से कोई बीस मिनट पहले उपस्थित हो गये।

गाड़ी एकदम ठीक समय पर पहुंची। न एक मिनट लेट न एक मिनट बिफोर और यात्रियों के उतरने चढ़ने के क्रम में बबलू भाई भी मय सामान समा गये। बबलू भाई के उस हमदर्द ने उन्हें एक अन्य व्यक्ति के हवाले किया और उतर गया और गाड़ी खुलने तक बाहर से मैनेजमेंट संभाले रहा। केवल दो लोगों के लिए ही जगह छेंकी जा सकी थी और बबलू भाई चार जने। एक सीट एक स्टेशन बाद खाली होनी थी और एक सीट तीन स्टेशन बाद।

लोकल ट्रेन में एक तरफ तीन सीटर पर दो लोग बैठे थे। बीच की जगह, जाहिर था अर्ध आरक्षित थी, यानी किसी के लिए छेंकी हुई थी। सामनेवाले तीन सीटर पर एक आदमी था। फिर भी बबलू भाई ने पूछा तो सामने की सीट दिखा दी गई। जब तक बबलू भाई अपने बड़े पुत्र को उस सीट पर आसीन करवा पाते, कोई और उस सीट पर अपना रूमाल फेंककर अर्ध आरक्षित कर चुका था। अब भी विंडो सीट खाली थी, जिस पर एक बैग रखा था। साफ था कि वह भी खाली नहीं थी।

ट्रेन में जब सीटें भरी हों और खिड़की वाली सीट पर कोई बैग रखा हो और कोई उसे खाली समझे तो उसे आप क्या कहेंगे। सो बबलू भाई ने उस सीट के बारे में नहीं पूछा। लेकिन अगले कुछ ही सेकंड बाद अभी-अभी सवार हुए एक आदमी ने पूछा तो बगलवाले ने उस सीट से अपना बैग उठा लिया। उसे वह सीट मिल गई। बोलने से कुछ न कुछ तो होता ही है। दोनों मौके से बबलू भाई चूक गए। बगल के दो सीटर वाली दोनों पर दो-दो लोग थे। ट्रेन खुलने से दो चार सेकेंड पहले बगल की दो सीटर में से एक पर विंडो सीट पर बैठा आदमी अचानक उठा और अपना बैग लेकर चल पड़ा और वहां खड़े किसी और को वह सीट मिल गई। अब तो स्थिति और परिस्थिति सामने थी, सो निपटना था; बिना किसी अगर-मगर लेकिन-वेकिन, पर, किंतु-परन्तु के। बबलू भाई ने पत्नी और छोटे बेटे को बैठाया, सामान टिकाया और बड़े बेटे के साथ अगले स्टेशन पर खाली होनेवाली सीट के सामने टिक गये। उतरनेवाला मानो इसी की प्रतीक्षा कर रहा था। वह तत्काल उठ खड़ा हुआ और बबलू भाई के बड़े बेटे को भी सीट मिल गई। इसी तरह बबलू भाई को भी सीट मिली लेकिन परिवार तीन भागों में था।

लोकल ट्रेन के रोज यात्रा करनेवाले झुण्डों और साल में दो एक बार यात्रा करने वाले झुण्डों में कुछ समानताएं होती हैं और कुछ अंतर भी होते हैं। इनमें एक समानता यह भी है कि दोनों तरह के यात्रियों में से कुछ को सीट चाहिए, भले ही यात्रा के अधिकांश भाग में वे उस सीट पर न बैठें। ट्रेन में मिल-बांटकर खाना भी एक समानता में है। अब अगर सबको एक जगह सीट न मिली हो तो खाद्य पदार्थ सबके पास पहुंचाए जाते हैं, तथापि, मजा तो सबके साथ आता है और यही सब एक साथ वाला मजा मिलने की संभावना नहीं दिखाई दे रही थी।

कहते हैं कि ऊपरवाला शक्करखोर को शक्कर दे ही देता है। अगले स्टेशन पर एक दैनिक यात्री अपने झुण्ड के ताश खेलने की व्यवस्था करता दिखा।

बबलू भाई ने पता नहीं किस इंस्टिंक्ट के मारे तीन जगह बिखरे अपने परिवार की बात बता दी। बोलने से कुछ न कुछ तो होता ही है। हुआ। अगले पंद्रह मिनट में ताश खिलाड़ी झुण्ड में पत्ते फेंटे जा रहे थे। कुछ सीटदार लोग जिन्हें ताश खेलने का मौका नहीं मिला, वे अपनी सीट से उठकर दूसरों का ताश खेलना देख रहे थे, उन्होंने खड़ी महिलाओं को अपनी सीटें दे दीं। अब बबलू भाई का परिवार एक जगह था और इतने दिनों की चिंताओं का कहीं अता-पता नहीं था, यात्रा के आनंद की शुरुआत हो चुकी थी, थैले से मठरियां प्रकट हो चुकी थीं, क्योंकि बबलू भाई सपरिवार जा रहे थे, क्योंकि बबलू भाई को सपरिवार जाना था।

रक्षक बना भक्षक

बिकास कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक, हावड़ा मंडल

प्रकृति और मानव के बीच संघर्ष अनंतकाल से जारी है। मानव जीवन के विरुद्ध प्रकृति के जो अनेक प्रकार के प्रकोप सामने आते रहते हैं, उनमें से बाढ़ का प्रकोप सबसे अधिक भयावह एवं दर्दनाक माना गया है। जल को सर्वदा जीवन का पर्यायवाचक माना गया है। इसे व्यक्ति की अस्मिता और सम्मान के प्रतीक के रूप में भी स्वीकारा गया है, परन्तु यही जल जब अबाध गति से बहते हुए सभी सीमाओं और बंधनों को तोड़ते हुए आगे बढ़ती है तो वह चेतनशील जीवन को भी स्थिर व जड़वत बना जाती है। एक बार ऐसी ही एक अप्रिय घटना का निकट से अनुभव करने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ था। यह बात वर्ष 1999 की है। इसी वर्ष हुगली जिले के चांपदानी अंचल में भीषण गर्मी पड़ने के पूर्व से ही वर्षा शुरू हो गई थी। शुरू-शुरू में तो रूक-रूककर वर्षा होती रही, फिर कई दिनों तक निरन्तर तीव्रता से होती और पुनः बंद हो जाती। बारिश की यह प्रक्रिया यूं ही कई दिनों तक चलती रही।

गंगा नदी के तट पर बसा हुआ यह अंचल अपनी मनोरम दृश्यों व औद्योगिक बेल्ट के कारण ज्यादा प्रसिद्ध है। इसी अंचल में अंगस क्षेत्र के अंतर्गत एक नहर है, जिसे स्थानीय लोग अंगस नहर के नाम से भी पुकारते हैं। इस नहर की पाट बहुत चौड़ी है। नहर के चतुर्दिक ई.एस.आई अस्पताल, श्रमिक कल्याण केंद्र, डलहौसी जूट कंपनी, रिवर ब्रिज आदि स्थित है। मुझे याद है, उस दिन गंगा नदी के जल को इस नहर में खोला गया था, बारिश भी तेज हो रही थी, जिससे नहर का जल स्तर अपने वास्तविक जल स्तर से थोड़ा ऊपर उठा हुआ था। पिछले तीन दिनों से लगातार हो रही बारिश ने उस नहर में उफान पैदा कर दिया। परिणामस्वरूप सीमा में बंधी नहर का पानी सीमा को लाँघकर सड़क पर प्रवाहित होने लगा। धीरे-धीरे पानी आसपास की झुग्गियों को अपने आगोश में लेकर आगे बढ़ती गई। उत्सुकतावश मैं अपने घरवालों से पूछकर घर से करीब 500 मी. की दूरी पर जल की धारा के करीब आकर खड़ा हो गया था। जल की धारा का दृश्य बड़ा ही डरावना था। ढ़ोर-डंगर तिनकों की तरह बहे जा रहे थे। तभी मुझे दूर से खंडहर होती हुई छत एवं कई जीवित पशु भी जल के बहाव में बहते हुए दिखाई पड़े। धीरे-धीरे इस निर्मम जल के प्रकोप नें अपने आसपास के समूल को ही पूरी तरह नष्ट कर दिया।

जल जो जीवन एवं शीतलता का प्रतीक है, आज वह अपने विकराल रूप में दिखाई पड़ रहा था। किसी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि जल जो अब तक जीवन का रक्षक बना हुआ था, आज वह प्राणों का भक्षक बन जाएगा। चाहे चारपाई पर लेटा हुआ व्यक्ति हो या स्वप्न लोक में विचरण करता हुआ युवक, रसोईघर में दोपहर का भोजन बनाती हुई महिलाएं या फिर घर के आंगन में क्रीड़ा करने वाले बच्चे, किसी को भी इस विषम संकट की तनिक भी सूचना न थी। बाढ़ का जल आसपास की झुग्गियों को निर्बाध गति से अपने साथ बहाता गया।

जिन झुग्गियों को बाढ़ की क्रूरता का शिकार होना पड़ा वहाँ मजदूरवर्गीय कई लोग सपरिवार रहा करते थे। बाढ़ ने तो उन परिवारों की कमर ही तोड़ दी। कुछ लोग तो किसी प्रकार घटना स्थल से भाग निकले और जो फँसे रहे उनमें से कुछ को राहत कर्मी दल द्वारा बाहर निकाला गया और नजदीकी अस्पताल में चिकित्सकीय जांच हेतु भेजा गया।

सिलसिलेवार घटनाओं के क्रम में ही एनजीओ वाले भी वहाँ पहुँच अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं और जरूरतमंदों को जीवन की मौलिक आवश्यकताओं, यथा वस्त्र और भोजन तो मुहैया करवाते ही हैं साथ ही उन्हें अपने साथ आश्रमों में भी ले जाने की बात करते हैं। समय और परिस्थिति की मांग को देखते हुए कुछ लोगों ने तो एनजीओ के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उन्हें प्राथमिकता देते हुए उनके साथ निकल पड़े पर कुछ स्वाभिमानी मनुष्यों ने आत्मसम्मान के साथ जिंदगी बसर करने को ही अपने जीवन का सबसे बड़ा उत्स माना।

यह जीवन की विडम्बना ही है कि जो जल जीवन की ऊर्जा एवं शक्ति का द्योतक है, आज उसने ही अपनी संयम एवं संतोष की सीमा को लांघ दिया है। आज उसके जल तांडव ने उसे मानव समुदाय का रक्षक न बनाकर नरसंहार करने वाला भक्षक बना दिया है। मानव को भी प्रकृति के इस भयावह कृत्य से कुछ सीख लेनी चाहिए। इन प्राकृतिक संसाधनों का दोहन न कर उनके संरक्षण की ओर भी ध्यान देने की नितांत आवश्यकता है। ऐसा करके ही प्रकृति एवं मनुज के बीच तालमेल स्थापित किया जा सकता है।

हावड़ा मंडल की वर्ष 2023-2024 की उपलब्धियाँ

हावड़ा मंडल राजभाषा विभाग में दिनांक 01.06.2023 को हिंदी निबंध और हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन तथा दिनांक 02.06.2023 को हिंदी वाक् प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 23.06.2023 को भारतीय रेल यांत्रिक एवं विद्युत अभियंत्रण संस्थान (इरिमी), जमालपुर में आयोजित अखिल रेल हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में हावड़ा मंडल की श्रीमती सोमा अधिकारी, लेखा सहायक को हिंदी वाक् प्रतियोगिता में प्रेरणा स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में एतद्वारा 2,500/- रुपये के पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया ।

दिनांक 27.07.2023 एवं 28.07.2023 को मालदह मंडल के रेलवे इंस्टीच्यूट में अंतर मंडलीय सांस्कृतिक प्रतियोगिता 2023 का आयोजन हुआ। इस प्रतियोगिता में हावड़ा मंडल द्वारा हिंदी नाटक 'नहीं' का मंचन किया गया और नाटक के उत्कृष्ट मंचन के परिणामस्वरूप इस मंडल को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

(2) दिनांक 25.09.2023 को कर्मचारियों के लिए राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता एवं दिनांक 26.09.2023 को आशुलिपिकों हेतु हिंदी डिक्टेशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 30.11.2023 को अधिकारियों हेतु आयोजित राजभाषा प्रश्नोत्तरी में चयनित अधिकारियों को पुरस्कृत करते हुए हावड़ा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक।

दिनांक 02.01.2024 को मंडल रेल प्रबंधक महोदय द्वारा कटवा-आजिमगंज सेक्शन के टेंया, सालार, बाजारसौ, चौरीगाछा, कर्णसुवर्ण जीवन्ति हॉल्ट, खागड़ाघाट रोड एवं आजिमगंज स्टेशन का विशेष निरीक्षण के दौरान राजभाषा संबंधी निरीक्षण भी किया गया।

चिकित्सा विभाग की गतिविधियों की एक झलक

डॉ. मिहिर चौधुरी प्रमुख, मुख्य चिकित्सा निदेशक, पूर्व रेलवे का मंडल रेल अस्पताल का निरीक्षण (22.09.2023)।

स्वाधीनता दिवस के अवसर पर मंडल रेल अस्पताल, हावड़ा के मरीजों के स्वास्थ्य की जानकारी लेते हुए श्री संजीव कुमार मंडल रेल प्रबंधक, हावड़ा एवं देवाशीष गुहा, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक, हावड़ा (15.08.2023)।

स्वच्छता ही सेवा, मंडल रेल अस्पताल, हावड़ा (01.10.2023)।

दाग अच्छे हैं!

रवि कुमार, तकनीशियन-1
कैरिज एंड वैगन वर्कशॉप,
पूर्व रेलवे, लिलुआ

दाग शब्द से जब हमारा परिचय हुआ तब तक हम पूर्णतः बेदाग थे। गांव की गलियों में घूमते-घूमते यह ख्याल आया कि पड़ोसी के घर ताला लटक रहा है क्यों ना अपने अक्ल का ताला खोला जाए। पड़ोसी के अहाते में प्रवेश कर अनार तोड़ा जाए। साम्यवाद तो यही कहता है जहां जिस सामान की कमी हो वहां वह पहुंचाओ। दोपहर में पार्टी तो खूब जमी। हमने बड़ी सफाई से काम किया, बिना कोई निशान या प्रमाण छोड़ें वापस हुए। मां ने हमारे कपड़े देखा तो खून के कुछ धब्बे स्पष्ट नजर आए। मां ने हमारे शरीर का दो-चार बार मुआयना किया किंतु रक्तश्राव का कोई प्रमाण नहीं मिला, तब तक हम स्वयं स्वीकार बैठे कि अनार हमने ही चुराया है। नई आदत चोरी पर ब्रेक लगाने हेतु मां ने पहले हमें धोया फिर कपड़ों को, लेकिन सब बेअसर। तब दाग का लगना या लगाना अच्छा नहीं माना जाता था। बाद में उन्होंने समझाया 'लोभम् पापस्य कारणम्'। तब से हमने न लोभ की तरफ आंख उठाकर देखा न ही लभ की तरफ।

अगली कक्षा में एक दिन गुरुजी ने बता ही दिया 'अति लोभम् न कर्तव्यो लोभम् नैव परित्यज्येत, अति लोभाभिभूतस्य चक्रम् भ्रमति मस्तके।'

तब जाकर लोभ का कुछ गुंजाइश हमें मिला। लोभ ने हमें धन की ओर भगाया, धन हमें शहरों की ओर ले गए, शहर हमें प्रतियोगी होना सिखाते हैं। प्रतियोगिता से हमें कभी आत्म गौरव तो कभी ईर्ष्या ही होती है। यह सब करते हम दूसरे का माल उड़ाते, अपना बचाते कब बुद्धिजीवी की श्रेणी में आ गए, पता ही न चला। अतः सोना सी काया वाले सभ्य दिखने वाले मानव के हृदय में कितने दाग धब्बे हैं कहना मुश्किल है। मिट्टी को छूने अथवा मिट्टी लगने पर नाक भौह सिकोड़ने वाले लोगों के हृदय पर कीचड़ की कितनी परते हैं, कहना मुश्किल है। हां ये लोग इलाज के लिए मिट्टी की ओर जरूर लौटते हैं। आवश्यकता पड़ने पर एकांत में मड थेरेपी करवाते हैं।

मानव को अपनी चादर मैली होने का एहसास तब हुआ जब चिड़िया खेत चुग गई थी।

तब से अपने मन को स्थिर करने के लिए दाग को कम करने के लिए वह गाता है

'मैली चादर ओढ़ के कैसे द्वार मैं तेरे आऊं'

अपने हृदय को थोड़ा साफ कर व्यक्ति जगह बनाता है फिर उस जगह को नए दाग धब्बों के हवाले करता है। यह व्यक्ति के दिनचर्या का हिस्सा होता है। अक्सर मैला उठाने वाले का मन उतना मलिन नहीं होता जितना उसे देखकर नाक सिकोड़ने वाले का होता है। व्यक्ति के हृदय के दाग बढ़ते गए तो उसने बाजार की ओर देखा। बाजार तो डिटर्जेंट के विभिन्न प्रकारों से भरा पड़ा है। एक कंपनी ने कहा दाग हृदय के हो, चरित्र के हो अथवा कपड़ों के सब धूल जाएंगे। उसका स्लोगन था 'ऐसे दाग, वैसे दाग, कैसे दाग सर्फ एक्सेल है न'।

दूसरे ने कहा दाग तुम्हारे हैं, तुम्हारे द्वारा उत्पन्न किए गए हैं, तुमने उसे सहर्ष उत्पन्न किया है तो फिर झिझक कैसी, समाज का डर कैसा। इस पर गर्व करना सीखो और इसके साथ जियो। उसने एक नया स्लोगन दिया

'दाग अच्छे हैं'

इसी के साथ लोगों में अपने दोस्तों, संबंधित पड़ोसियों पर कीचड़ उछालने का ट्रेंड जोरो से चला। लोगों ने अपने को बेदाग रखने और दूसरे पर सहर्ष कीचड़ उछालने पर संतुष्टि व्यक्त की। उन्हें क्या पता दाग हो अथवा कीचड़ सबसे पहले उछालने वाले के मन में स्थाई घर करते हैं तब दूसरों तक पहुंचते हैं।

साहस से सफलता

वी. के. त्रिपाठी
पूर्व रेलवे, लिलुआ

अगर हम कोई भी कार्य करने से पहले ही डरने लगे तो वह काम हम नहीं कर पाएंगे, क्योंकि हमारा डर हमें उस कार्य को करने से रोकेगा लेकिन हम साहस और हिम्मत से उस कार्य को करने का प्रयास करेंगे तो कठिन से कठिन कार्य भी हम कर लेंगे। जिस काम को करने से डर लगे उस काम को करना ही साहस है जब तक हम साहस नहीं करेंगे हम अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। विश्व में बड़े-बड़े कार्य साहस के बल पर ही सम्पन्न हो पाए हैं उन्होंने हिम्मत नहीं हारी मन में ठान लिया, 'करेंगे या मरेंगे लेकिन अब पीछे नहीं हटेंगे चाहे कितनी भी परेशानी ही क्यों ना आ जाए।' जब हम नई-नई जगह पर जाते हैं तो हमारे मन में यह भावना उठने लगती है कि वहां जाकर हम अपने आपको कैसे एडजस्ट करेंगे। लेकिन वहां पहुंचने के उपरांत हम धीरे-धीरे अपने आपको एडजस्ट कर ही लेते हैं। यदि हमारे मन में डर रहता और हम उस नई जगह पर नहीं जाते हैं तो उस जगह और वहां के लोगों से कभी परिचित ही नहीं हो पाते। हमने प्रायः देखा मनुष्य शेर, हाथी जैसे जानवरों को भी साहस के बल पर अपना पालतू बना लेता है। यदि शेर के डर से हम शेर के पास ही नहीं जाते तो शेर कभी पालतू ही नहीं बन पाता। कामयाबी प्राप्त करने के लिए दृढ़ता से चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

साहसी वही है जो उस कार्य को भी कर डाले जिस कार्य को करने से लोगों को डर लगता है। हमें इस बात की जरा भी चिंता नहीं करना चाहिए कि इस कार्य को करने से हमारा जीवन समाप्त हो जाएगा। एक बार एक राजा को अपने राज्य के लिए योग्य सेनापति की आवश्यकता थी जो साहसी होने के साथ-साथ ही बुद्धिमान व होशियार हो। राजा ने अपने राज्य में घोषणा की कि जो व्यक्ति पिजड़े में बंद शेर को नियंत्रण कर अपना पालतू बना लेगा, उसे राजा अपने राज्य का सेनापति घोषित करेगा। राजा की घोषणा को सुनकर बहुत से लोगों के मन में सेनापति बनने का विचार आया। काफी लोग राजा के कहे अनुसार पिंजरे के पास आते हैं, किंतु शेर की दहाड़ सुनकर दूर से ही भाग जाते। एक दिन विक्रम नाम का लड़का राजा के दरबार में आया और उसने राजा से कहा कि मैं आपके शेर को नियंत्रित कर पालतू बना लूंगा। राजा ने उसे शेर के पास जाने की आज्ञा दे दी। विक्रम शेर के पिजरे में जाने से पहले अपने साथ एक कुर्सी को भी ले गया। पिजरे में वह शेर के सामने कुर्सी कर शेर की आँखों में आँखे डालकर उसे घूरने लगा। जंगल के राजा ने जैसे ही देखा कि यह व्यक्ति उसे घूर रहा है उसने विक्रम के ऊपर आक्रमण कर दिया, विक्रम ने बड़ी फुर्ती से अपनी कुर्सी को शेर के सामने कर दिया, इस प्रकार शेर जितनी बार आक्रमण करता विक्रम अपनी कुर्सी के चारों पावों को उसके सामने कर देता। कुर्सी के पावों की वजह से शेर का मुँह भी घायल हो चुका था। अतः शेर बार-बार आक्रमण करके थक चुका था। किंतु वह विक्रम के पास नहीं पहुंच पाता और कुर्सी के पांवों में ही उलझ जाता अंत में शेर थकहार कर बैठ गया। और विक्रम ने इसी दौरान शेर का ध्यान अपनी तरफ से हटते ही उसे अपनी गिरफ्त में लेकर अपना पालतु बना लिया। यह विक्रम के साहस और उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति व एकाग्रता का ही परिणाम था कि शेर भी उसकी गिरफ्त में आ गया।

राजा ने उसके साहस और दृढ़ इच्छा शक्ति को देखकर उसे अपना सेनापति बना लिया। इसीलिए कहा जाता है कि एकाग्र व साहसी व्यक्ति साधारण होने पर भी अपनी मंजिल प्राप्त कर लेता है। जबकि असाधारण व्यक्ति एकाग्र ना होने के कारण इस शेर की भांति पराजित हो जाता है। साहस एकाग्रता का ही नाम है। एक चींटी भी जब अपना कार्य एकाग्रता के साथ करती है तो वह भी कठिन से कठिन कार्य आसानी से कर लेती है। अकसर यह कहा जाता है कि फौजी बहादुर एवं साहसी होते हैं वह एक बार जो ठान लेते हैं, उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। परिस्थितियाँ चाहें कैसी भी ही वो अपनी मंजिल प्राप्त कर लेते हैं। यदि सभी व्यक्ति अपने जीवन में डर से जूझने के लिए अपने आपको तैयार कर ले तो वह स्वयं भी साहसी बन जाते हैं। अपने अंदर साहस पैदा करने के लिए बस आत्मविश्वास, एकाग्रता एवं धैर्य को बनाए रखना होगा।

एक अविस्मरणीय संस्करण

रेणु सिन्हा
पत्नी - श्री महेन्द्र प्रसाद
मुख्य टिकट निरीक्षक (सा.)
पूर्व रेलवे, हावड़ा

हम सभी लोग जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी ही नहीं बल्कि दुनिया में सबसे ज्यादा जिज्ञासु जीव है, वो निरंतर अपने आस-पड़ोस, देश-दुनिया के बारे में जानने की उत्सुकता रखता है। इसी उत्सुकता को शांत करने के लिए वो देश भ्रमण पर निकल जाता है।

अगर देखा जाए तो पुस्तकें भी हमारे ज्ञानवर्धन में सहायक होती हैं, परंतु हमें किसी जगह, प्रांत या देश को जानने के लिए वहाँ जाना पड़ता है, ठीक वैसे ही जैसे हिमालय के सौंदर्य को या पहाड़ों के ऊपर उगे पेड़ों और वनस्पतियों को महसूस करने के लिए हमें वहाँ जाना ही पड़ेगा।

इसी तरह अनेकों यात्रा करते हुए हम बहुत सारी चीजों को जान लेते हैं जो हमारे मानस पटल पर अंकित हो जाता है और साथ ही साथ उस यात्रा के दरम्यान कई ऐसी घटनाएं भी घट जाती हैं जो हमारे लिए एक यादगार बनकर दिलो दिमाग में स्थायी जगह बना लेती हैं, मुझे भी यात्रा करना, नए-नए जगहों पर जाना और वहाँ के बारे में जानने और समझने के साथ जीवन को खुशी-खुशी जीने का शौक है।

घुमना (यात्रा) तो सभी लोग चाहते हैं, पर मेरे घुमने का उद्देश्य कुछ अलग ही होता है, एक जगह पर रहकर वैसे भी लोगों का मन उब जाता है। कुछ लोग अपने इस उबाउपन को दूर करने की चाहत में निकल पड़ते हैं, तो कुछ लोग मनोरंजन करने के लिए, पर मेरी यात्रा थोड़ी अलग होती है निसंदेह मनोरंजन तो होता ही है, पर मैं उस जगह के लोगों की रहन-सहन और वहाँ के सामाजिक परिवेश के साथ रीति-रिवाजों से भी परिचित होना चाहती हूँ।

हर यात्रा के दौरान मुझे कुछ न कुछ नया सीखने को मिला है और मैंने उन यादगार पलों को सहेज कर रखा है। आज उसी एक वाकये को इस पन्ने पर उकेरने की कोशिश कर रही हूँ। सितंबर का महीना था मैं अपने पति के साथ वैष्णो देवी की यात्रा पर निकली थी, वैष्णों देवी की यह यात्रा पहली नहीं थी इसके पहले मैं पांच बार जा चुकी थी तब बच्चे भी साथ होते थे। इस बार पढ़ाई की व्यस्तता के कारण हम दोनों ही निकल पड़े थे, ये यात्रा हमारे लिए धार्मिक होने के साथ-साथ पैदल चलकर वहां तक जाने में जो अनुभूति महसूस होती थी इस कारण भी मुझे वहां बार-बार जाना अच्छा लगता था।

हावड़ा स्टेशन से हमारी यात्रा की शुरूआत हिमगिरी एक्सप्रेस द्वारा शुरू हुई और दो दिन के बाद हमलोग कटरा पहुंचे, पर मेरे घुटने पहले की तरह स्वस्थ नहीं रहे इस कारण हमलोगों ने हेलीकाप्टर की टिकट ले ली थी, जिसकी यात्रा का समय सिर्फ तीन मिनट था। हेलीकाप्टर की मेरी पहली यात्रा थी, सिर्फ छः सवारी एक साथ यात्रा कर सकते थे उनमें हमदोनों का वजन सबसे कम होने के कारण हमें बिल्कुल आगे बैठने का मौका मिला। जिससे यात्रा और रोमांचक हो गया, थोड़ा डर और रोमांच भरा तीन मिनट की यह यात्रा थी और हम सांझी छत पहुंच गए।

सांझी छत से मां के भवन तक पैदल ही यात्रा की रास्ते में चढ़ाई नहीं होने के कारण तकलीफ नहीं हुई। मां के दरबार में पहुंचकर मैं सारी थकान भूल चुकी थी और हमने बहुत ही अच्छे से दर्शन किए।

यूँ तो मां के दर्शन के लिए काफी लम्बी लाईन लगानी पड़ती है पर इस बार ऐसा नहीं हुआ था, इस बार दो घंटे में ही हमने दर्शन कर लिया था। एक बार की यात्रा में हमें काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा था। हमारे छोटे दोनों बच्चे साथ में थे और नवरात्र का समय

था, काफी भीड़ थी। हमलोगों को छह बजे शाम से सुबह तक बैठना पड़ा, किसी तरह से चार कंबल की व्यवस्था हुई जिससे बच्चों को ठंड से बचा पाई। हमलोग खुले आसमान में बैठे थे ठंड और बच्चों को अपने पैर के ऊपर सुलाने के कारण मेरे पैर बिल्कुल सुन्न हो गये थे जिससे मेरा चलना मुश्किल हो रहा था। फिर भी मैंने कोशिश की और गर्म-गर्म काफी पीया तब जाकर मेरे पैरों में गति आई वैसे तो मैं बहुत डर गई थी। फिर मैंने एक दवा भी ली, थोड़ी देर बाद मैं सामान्य हो गई और उसके दो-तीन घंटे बाद दर्शन करने में सफल हो पाई। बहरहाल ये तो हमारी पूर्व यात्रा की कहानी थी।

वर्तमान में लौटते हैं, माता के दर्शन करके जब हम कोलकाता लौट रहे थे और जम्मु रेलवे स्टेशन के एक नं. प्लेटफार्म पर सामान के साथ बैठे थे तभी उद्घोषणा हुई कि हमारी ट्रेन एक नं. के बजाए 2 नं. प्लेटफार्म पर आएगी। मेरे पैर में दर्द होने के कारण पति महोदय ही सारे सामान लेकर ओवरब्रीज की ओर बढ़ रहे थे, तभी उसी वक्त एक व्यक्ति मेरे पति के पास आया और कुछ बोला वो मैं ठीक से सुन तो नहीं पाई किंतु पीछे पलटकर देखा तो उसके साथ एक स्त्री और दो लड़की दिखी। चूँकि ट्रेन आने में 15 मिनट की रह गए थे, इसलिए उसकी बात को नजरअंदाज कर हमलोग जल्दी-जल्दी सीढ़ियां चढ़ने लगे और दो नं. प्लेटफार्म पर आकर बैठ गए। फिर मैंने अपने पति से पूछा तो उन्होंने बताया कि वो भी दर्शन के लिए आए थे परंतु किसी तरह उनका सारा सामान और पैसा चोरी हो गया था और काफी देर से वो भूखे थे और लोगों से मदद मांग रहे थे, जिस स्त्री को मैंने देखा वो उसकी पत्नी थी और वो दोनों लड़कियां उनकी बच्ची ऐसा उस व्यक्ति का कहना था। देखने में वो एक संभ्रांत परिवार के लग रहे थे, ये सुनकर मुझे और मेरे पति को बहुत अफसोस हो रहा था कि इतने लोगों के बीच मेरे पति से मदद की उम्मीद लगाई और हम उनको मदद नहीं कर पा रहे थे, फिर मैंने अपने पति से कहा कि गाड़ी आने में अभी 10 मिनट शेष रह गया है तुम अभी भी उनकी मदद कर सकते हो।

इतना सुनते ही मेरे पति मुझे वही 2 नं. प्लेटफार्म पर छोड़कर दौड़ते हुए उनलोगों के पास 1 नं. प्लेटफार्म पर पहुंचे जहां वो लोग हमसे मिले थे, पर वो वहां नहीं मिले, मेरे पति बहुत तेजी से इधर-उधर खोजते रहे। अंततः थोड़ी ही देर में वे चारों स्टेशन से बाहर जाने वाले रास्ते में बैठे मिल गए। फिर मेरे पति ने उन चारों को लेकर स्टेशन में स्थित जनता आहार में भोजन कराने को ले गए और कुछ पैसे भी दिए और वहां खाना खा रहे लोगों से आग्रह किया कि यथाशक्ति इस व्यक्ति की मदद करें। ज्यादा देर वो वहां रूक नहीं सकते थे क्योंकि हमारी ट्रेन को आने में काफी कम समय रह गया था। इधर मैं भी बेचैन हो रही थी कि वक्त कम था और वो अभी तक आए नहीं थे। फिर देखा कि वो दौड़ते हुए आ रहे थे।

उपरोक्त सारी बातें उन्होंने मुझे बताई और उन्होंने जो उनकी मदद की जिससे वो व्यक्ति संतुष्ट था और ये बिल्कुल शांत हो गए थे। पहले जो मदद न कर पाने के कारण जो अपराधजन्य बोध हो रहा था, वो बिल्कुल समाप्त हो चुका था और वो शांत दिख रहे थे और मुझे भी काफी सकुन मिला। हालांकि सहायता मेरे पति ने की पर इस बात की खुशी मुझे मां के दर्शन करने से भी ज्यादा हुई।

उस दिन मुझे वास्तव में अनुभव हुआ कि लोग यूं ही नहीं कहते हैं कि किसी जरूरतमंद की मदद करके जो खुशी मिलती है उसकी तुलना किसी खुशी से नहीं की जा सकती। एक बात से मैं और प्रसन्न थी कि माँ ने हमलोग के द्वारा उस व्यक्ति की मदद करवाई, ऐसा लगा मानो वैष्णो मां के दर्शन का यह फल है।

अपनी इस यात्रा संस्मरण से मैं लोगों से यही कहना चाहूंगी कि हम अपने जीवन में चाहे कितना भी व्यस्त क्यों न हों ईश्वर हमें अगर किसी की मदद के लिए चुनते हैं तो हमें उस अवसर को कभी गंवाना नहीं चाहिए। यही वो घटना थी जो मैं आपलोगों से सांझा करना चाह रही थी। ये कभी न भूलने वाली मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना बनकर रह गई।

बस मैं ऐसी ही यात्रा करते रहना चाहती हूँ और ईश्वर मुझसे इसी प्रकार मदद करवाते रहें।

राणा सांगा - एक महान योद्धा

सुमित सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
मंडल कार्यालय, हावड़ा

भारतीय इतिहास कई महान योद्धाओं से सुसज्जित है। इन महान योद्धाओं में मेवाड़ का एक महान योद्धा संग्राम सिंह भी थे जिन्हें इतिहास के पन्नों में 'राणा सांगा' के नाम से दर्ज किया गया। वह एक ऐसे शख्स थे जिन्होंने अपने जीवनकाल में कई आक्रमण झेले। उनके जीवन की यह एक बड़ी व्यथा ही थी कि उन आक्रांताओं में कुछ उनके अपने ही थे। लेकिन एक आँख, एक पैर और एक हाथ गवाने के बावजूद भी युद्ध में झुकना उन्हें गवारा नहीं था यही कारण था कि इतिहास के पन्नों ने उन्हें मेवाड़ के एक शूरवीर के रूप में वर्णित किया। मेवाड़ की जब भी बात आती है तो हमें महाराणा प्रताप याद आते हैं, लेकिन आज हम उस शूरवीर की बात करने जा रहे हैं जो जज़्बा, वीरता, हठधर्मिता और देशभक्ति के मामले में प्रताप से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं थे।

महाराणा सांगा के पिता महाराणा रायमल के 13 पुत्र एवं दो पुत्रियां थी और उन 13 पुत्रों में पृथ्वीराज, जयमल और संग्राम सिंह के पास उत्तराधिकारी बनने के सभी गुण थे। महाराणा रायमल इन्हीं तीन राजकुमारों में से एक को राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। वहीं दूसरी ओर महाराणा रायमल के चाचा सारंगदेव भी सिंहासन में नजर गड़ाये बैठे थे।

इतिहास में एक किस्सा प्रसिद्ध है कि तीनों राजकुमार अपनी जन्मपत्री लेकर एक ज्योतिषी के पास जाते हैं तो ज्योतिषी इन राजकुमारों में से संग्राम सिंह को भविष्य का राजा बताते हैं। इसे सुनकर पृथ्वीराज बहुत नाराज होते हैं और वे अपने तलवार को निकालते हैं और संग्राम सिंह उर्फ राणा सांगा पर वार कर देते हैं, जिस कारण राणा सांगा की एक आंख फूट जाती है। इसके बाद सारंगदेव वहां पर पहुंचते हैं और वे सुझाव देते हैं कि जन्मपत्री को भीमल गांव के चारण जाति की पुजारिन को दिखाया जाए। वह ही अब सही भविष्यवाणी करेंगी। उसके बाद वे राजकुमार उस पुजारिन को अपना जन्मपत्री दिखाते हैं। वह पुजारिन भी राणा सांगा के ही राजयोग को बलिष्ठ बताती है। जिससे क्रुद्ध होकर भाई-भाई में युद्ध छिड़ जाता है। राणा सांगा को अपनों द्वारा दिया गया यह पहला आघात था जिससे राणा सांगा को वहाँ से भागकर सवंत्री गाँव जाना पड़ता है। वहाँ वह राठौर बिंदा नाम के एक व्यक्ति का शरण लेते हैं किन्तु राठौर बिंदा बाद में जयमल के साथ युद्ध में मारे जाते हैं, जिसके कारण वह भागकर अजमेर चले जाते हैं और वहाँ करमचंद पवार की पनाह लेते हैं। वहां पर वे कुछ समय तक अज्ञातवास में रहते हुए अपनी शक्ति को भी संगठित करते हैं। इधर पृथ्वीराज की मृत्यु हो जाती है और जयमल भी सोलंकियों के साथ युद्ध में मारा जाता है और सारंगदेव की भी हत्या पृथ्वीराज के द्वारा हो गई होती है। इस प्रकार संग्राम सिंह के लिए सिंहासन का रास्ता पूरी तरीके से साफ हो

जाता है, जिससे राणा सांगा अजमेर से वापस आते हैं और राणा सांगा का राजतिलक होता है। इस प्रकार वे 27 वर्ष की उम्र में मेवाड़ के राज्य के शासन का बागडोर अपने हाथों में लेते हैं और यहीं से इस महान योद्धा का एक महान अध्याय शुरू होता है।

महाराणा सांगा ने सिंहासन पर बैठने के बाद सभी राजपूत राजाओं तथा राज्यों को संगठित करना शुरू किया तथा एक मजबूत संगठन का निर्माण किया। उन्होंने सभी राजपूत राज्यों से संधि करके अपना साम्राज्य उत्तर में पंजाब से लेकर दक्षिण में मालवा तक बढ़ाया। उस समय उनका राज्य मालवा, दिल्ली, गुजरात के मुगल सुल्तानों के कब्जे से घिरा था। लेकिन उन्होंने इन सभी का सामना किया। इस तरह से पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर ग्वालियर (भरतपुर) तक अपना राज्य विस्तार किया। उस समय मुस्लिम साम्राज्य का ज्यादा विस्तार था, वह मुस्लिम सुल्तानों की डेढ़ सौ वर्ष की सत्ता को छीनने में लगे थे। यह सब करने के पश्चात इतने बड़े क्षेत्रफल वाले हिंदू साम्राज्य को कायम किया।

1518 में राणा सांगा ने इब्राहिम लोदी के खिलाफ खतोली की लड़ाई लड़ी। युद्ध के लिए जोश से भरी हुई दोनों सेनाएं हरवती (हरौती) की सीमा पर खतोली गांव के पास भिड़ीं। पांच घंटे की लड़ाई के बाद ही सुल्तान की सेना ने हार मान ली और युद्ध का मैदान छोड़ दिया। इस युद्ध में राणा सांगा ने एक लोदी राजकुमार को बंदी भी बना लिया और कुछ दिनों के बाद उसे रिहा कर दिया। इस युद्ध में राणा सांगा जीत तो गए थे किन्तु इस युद्ध ने उनसे एक हाथ और एक पाँव छीन लिया था ।

उधर अफगान में एक सुल्तान अपना वर्चस्व बढ़ा रहा था और वह था बाबर। 16वीं शताब्दी के प्रारम्भ में बाबर ने काबुल पर कब्ज़ा कर लिया, तब से ही उसके मन में एक ही इच्छा थी वह था हिंदुस्तान का सिंहासन। वह अपने पूर्वज तैमूर की कहानियाँ सुनसुन कर बड़ा हुआ। बाबर को ज्ञात था कि कैसे तैमूर ने झटके में शहर के शहर तबाह किए थे और हजारों को मौत के घाट उतारा था। वह तैमूर द्वारा पंजाब में जीते गए कुछ क्षेत्रों को वापस हथियाना चाहता था।

इसके लिए बाबर ने दिल्ली पर आक्रमण किया। इस आक्रमण के कारण आधुनिक भारत का पहला युद्ध पानीपत में लड़ा गया। इस युद्ध में लोदी की सेना मजबूत थी किन्तु बाबर के तोपों तथा मुदाफ़िआना युद्ध कौशल ने युद्ध का परिणाम बदल दिया। इस रणनीति के तहत बाबर ने सेना को तीन हिस्सों में बांटा। लेफ़्ट, राइट और सेंटर डिविज़न। लेफ़्ट और राइट विंग को भी फ़ॉरवर्ड और रियर डिविज़न में बांटा यानी आगे और पीछे दो हिस्से में। सेंटर डिविज़न के आगे की पंक्ति में बैलगाड़ियां खड़ी जिन्हें मज़बूत लोहे की बेड़ियों से आपस में बांधा गया, ताकि हमला होने पर वो भाग ना जाएं। बीच में सिर्फ़ इतनी ही जगह छोड़ी गई कि दो घुड़सवार सैनिक एक साथ निकल सकें। इस पंक्ति के पीछे तोपखाना लगाया गया जो बैलगाड़ियों से सुरक्षित था। बाएं और दाएं फ्लैंक पर माहिर तीरंदाज़ तैनात थे जो लगातार आक्रमण करा रहे थे। इस प्रकार सुरक्षित युद्ध कौशल और तोपों के प्रयोग ने लोदी को युद्ध के मैदान में हरा दिया। उसके बाद बाबर ने लोदी के सारे धनवैभव पर कब्ज़ा जमा लिया। तब यह आम धारणा यह थी कि वह भी तैमूर की तरह लूटपाट कर वापस चला जाएगा लेकिन अतिमहत्वकांक्षी बाबर के इरादे नेक नहीं थे। उसने दिल्ली में अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया।

बाबर के दिल्ली में साम्राज्य स्थापित करने की खबर सुनते ही राणा सांगा के कान खड़े हो गए। राणा का मानना था कि बाबर का दिल्ली में बैठना लोदी से भी बड़े ख़तरे का संकेत था। बाबर के अनुसार, राणा के पास 2 लाख सैनिकों की एक मज़बूत सेना थी। राणा ने बाबर के ख़िलाफ़ कई राजाओं का गठबंधन बनाने की हरसंभव कोशिश की और उसमें वह बहुत हद तक सफल भी हुए। राजस्थान के राजपूत राज्य जैसे हरौती, जालौर, सिरोह, डूंगरपुर, धुंधर और अम्बर, तुर्क़-अफ़गान के अवशेषों पर एक हिन्दू राज्य की स्थापना का स्वप्न लिए राणा ने बाबर के इरादों की भनक लगते ही उसे सबक सिखाने का मन बना लिया था। उन्होंने दिल्ली में हिन्दू राज्य की स्थापना के लिए अफ़गान तक की भी मदद ली। उन्होंने विशाल सेना-सेनापतियों की एक ऐसी फ़ौज खड़ी की, जिसके 'जय एकलिंग' का नाद करते ही आसमान भी थर्रा कर काँप उठता था।

पानीपत की पहली लड़ाई के बाद, बाबर ने माना था कि उसका प्राथमिक खतरा दो संबद्ध क्वार्टरों से आया था। राणा सांगा और उस समय पूर्वी भारत पर शासन करने वाले अफगान। इसी भय में बाबर ने एक परिषद बुलाया, उस परिषद में बाबर ने निर्णय लिया कि अफगान का खतरा बड़ा हैं इसलिए उसने हुमायूं को पूर्व में अफगानों से लड़ने के लिए एक सेना के प्रमुख के रूप में भेज दिया। किन्तु बाबर की यह एक बड़ी भूल थी। आगरा पर राणा साँगा की उन्नति के बारे में सुनने के बाद, हुमायूँ को जल्द याद किया गया। फिर बाबर ने धौलपुर, ग्वालियर, और बयाना को जीतने के लिए सैन्य टुकड़ी भेजी। आगरा की बाहरी सीमा को मजबूत बनाने वाले किले धौलपुर और ग्वालियर के कमांडरों ने बाबर के शर्तों को स्वीकार करते हुए अपने किलों को बाबर को सौंप दिया। हालांकि, बयाना के कमांडर, निजाम खान ने बाबर और सांगा दोनों के साथ बातचीत की। लेकिन बयाना के शासक ने बाबर से सहायता माँगी। बाबर ने ख्वाजा मेंहदी को मदद के रूप में भेजा पर राणा सांगा ने उसे परास्त कर बयाना पर अधिकार कर लिया। सीकरी के पास भी आरंभिक मुठभेड़ में मुग़ल सेना को पराजय का मुंह देखना पड़ा। लगातार मिल रही पराजय से मुग़ल सेना आतंकित हो गई और उनका मनोबल गिर गया। इस संदर्भ में स्कॉटिश इतिहासकार विलियम एर्स्किन ने लिखा था कि, बयाना में मुग़लों को अहसास हुआ कि उनका सामना अफ़गानों से कहीं भयंकर सेना के साथ हुआ है। राजपूत किसी भी वक्त जंग के मैदान में दो-दो हाथ करने के लिए तैयार रहते थे, और अपने सम्मान के लिए जान देने से भी उन्हें रत्ती भर गुरेज नहीं था।

इन छोटे-छोटे मुठभेड़ों ने बड़े युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की। फिर पानीपत के बाद आधुनिक भारत का दूसरा सबसे बड़ा युद्ध खानवा का युद्ध लड़ा गया। राणा सांगा ने युद्ध से पहले अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। उसकी सहायता के लिए हसन खां मेवाती, महमूद लोदी और अनेक राजपूत सरदार अपनी-अपनी सेना के साथ इक्कठे हो गए। खानवा में दोनों की सेनाएं आपस में भिड़ी। भयानक रक्तपात हुआ और यदि यह कहा जाएँ कि इस लड़ाई में मुग़लों की हालत खस्ता हो गयी थी तो इसमें रत्ती भर भी अतिशयोक्ति नहीं होगी बाबरनामा में बाबर ने खुद लिखा है, काफिरों ने वो भयंकर युद्ध किया कि मुग़ल सेना का मनोबल टूट गया, वो घबरा गए थे। राणा की सेना बाबर की सेना से युद्ध के मैदान में काफी आगे थी। राणा सांगा के युद्ध कौशल ने बाबर की सेना में भय पैदा कर दिया उनका मनोबल टूटने लगा। फिर बाबर ने युद्ध में अपने टूटे हुए सैनिकों में जोश भरने के लिए धर्म का सहारा लिया जो कारगर भी साबित हुआ। बाबर ने इस युद्ध को हिन्दू बनाम मुस्लिम बना दिया। उसने राणा के साथ युद्ध को इस्लाम की रक्षा से जोड़ कर अपनी सेना में जोश भर दिया। बाबर ने अपने सिपहसालारों से क़ुरानशरीफ़ पर हाथ रख कर राणा जैसी ताकत को खत्म करने की शपथ दिलाई। खानवा में हुए युद्ध से एक शाम पहले बाबर ने एक ऐसा उत्तेजित भाषण दिया जिसने भावी युद्ध को कथित काफ़िर बनाम इस्लाम के रक्षक से जोड़ दिया। बाबर ने इस्लाम की आन, बान और शान की हिफाजत के लिए अपनी सेना से एक सच्चे मुस्लिम की तरह लड़ने का वादा लिया। सच्चे मुस्लिम की परिभाषा में फिठ बैठने के लिए उसने शराब के प्याले पटक डाले और शराब छोड़ने की कसम खाई। दोनों सेनाओं ने खानवा में खून की नदियां बहा दी।

राणा सांगा ने इस युद्ध में कई अफगानी योद्धाओं को पराजित किया तथा आगे बढ़ते रहे किन्तु इस कारण उनका शरीर युद्ध के 80 घावों से भर गया। फिर भी वह कमजोर नहीं पड़े और बाबर की सेना को धूल चटाते रहे लेकिन, राणा सांगा एक जगह चूक गए थे। बाबर ने जिस तरह पानीपत में इब्राहिम लोदी को हराया था, उसने खानवा के युद्ध में भी उस रणनीति को अपनाया। राणा वीरता के बावजूद दुश्मन के छल, कपट और पैंतरेबाज़ी से वाकिफ न थे। बाबर खुद को मध्य में रख बाकी दोनों तरफ से सेना का ऐसा चक्रव्यूह बनाया, जिससे एक बार में कई तरफ से आक्रमण किया जा सके। तन-बदन पर लगे अनगिनत घावों से जूझते राणा सांगा ने भी सीधा बाबर की तरफ प्रस्थान किया और दुश्मन के मुखिया का ही काम तमाम करने के लिए पूरी ताकत से धावा बोला। विपरीत परिस्थितियों में उन्होंने संगठन, सेना और रणनीति बदला और बाबर के सुरक्षा चक्र को भेदने का

प्रयास किया किन्तु तोपों के आगे तलवार और भाला कुछ ही समय टिक सकता था। किन्तु शूरवीर सांगा हार मनाने को तैयार न थे। उन्होंने बाबर को राजपूताना साहस से अवगत करवाया जिसे देखकर बाबर भी अचंभित हो गया कि एक योद्धा जो एक हाथ, एक पाँव तथा एक आँख से वंचित है फिर भी ऐसे अद्‌भुत पराक्रम का प्रदर्शन कैसे कर पा रहा है।

लेकिन इसी बीच राजा शिलादित्य जिन्हें सिलहड़ी तोमर के नाम से जाना जाता था। अपनी 30 हजार घुड़सवार सेना को लेकर बाबर की सेना से जा मिले। इस धोखाधड़ी से हैरान राणा को अपनी योजना बदलनी पड़ी। इन परिस्थितियों में भी राणा सांगा लहूलुहान होकर भी दुश्मनों को परास्त करते रहे लेकिन इसी प्रकरण के दौरान एक गोली आकर राणा को लगी और वो बेहोश होकर गिर गए हालाँकि, युद्ध के मैदान से बेहोश राणा को वहाँ से निकाल लिया गया लेकिन राणा को मृत समझकर राणा की सेना बिखर गई। इस स्थिति को भापते हुए कमजोर राजपूत केंद्र को देखने के बाद, बाबर ने अपने लोगों को आक्रामक होने का आदेश दिया। राजपूत अब नेतृत्वहीन हो गए थे क्योंकि उनके अधिकांश वरिष्ठ कमांडर मर चुके थे और उनके बेहोश राजा युद्ध से बाहर हो गए थे।

राणा के जख्म ऐसे थे, कि वह चाह कर भी युद्ध में लौट नहीं सके। लेकिन राणा हार मानने वालों में से नहीं थे। अपनी पराजय उन्हें स्वीकार न थी। इतिहासकार प्रदीप बरुआ लिखते हैं कि- 'अगर बाबर ने तोपों की मदद नहीं ली होती और पानीपत वाली रणनीति न दोहराई होती, तो शायद दिल्ली में मेवाड़ का केसरिया ध्वज फहरा रहा होता।' इस युद्ध के बाद राणा का गठबंधन बिखर गया। जख्मों से जूझ रहे राणा दिल्ली में बैठे बाबर को फिर से ललकारने की योजना तैयार कर रहे थे। लेकिन, उनके दरबारियों और अन्य राजाओं को ये पसंद नहीं था। उन्हें दिल्ली और आगरा कब्जा कर बैठा बाबर अपराजेय नज़र आ रहा था। कुछ इतिहासकारों का दावा है कि बीमार राणा के दोबारा युद्ध की योजना से तंग आकर उनके ही लोगों ने उन्हें जहर दे दिया था।

इस प्रकार इस महान योद्धा जो जीवन भर विश्वासघातों से जूझता रहा, उनकी मृत्यु भी एक विश्वासघात ने ही की क्योंकि वह युद्ध के मैदान में अद्‌भुत था इसलिए उसे विश्वासघात से ही मारा जा सकता था।

इस युद्ध में राणा सांगा ने जिस तरह का प्रदर्शन किया, उसकी तुलना महाभारत काल के योद्धाओं से की जा सकती है। राणा के शरीर पर 80 जख्म थे। पहले की कई युद्धों में लड़ते-लड़ते उनका एक हाथ जा चुका था। एक ही आँख से देख पाते थे, दूसरी युद्ध की बलि चढ़ गई थी। एक ही पाँव से ठीक से चल पाते थे, दूसरा अपाहिज हो चुका था। फिर भी उन्होंने बाबर से टक्कर लेने का निर्णय लिया और उसे नाकों चने चबाने को मज़बूर किया। यह जज़्बा बाबर के लिए भी अकल्पनीय था। राणा ने जिस जज़्बे की नींव रखी, उस पर चल कर प्रताप, हेमू और बाजीराव जैसे कितने योद्धा अमर हो गए। मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर ने बाबरनामा में लिखा है कि दक्षिण में विजयनगर साम्राज्य के कृष्णदेवराय और हिंदुस्तान में राणा सांगा से बड़ा कोई महान शासक नहीं है।

राणा का अखंड हिन्दू साम्राज्य का स्वप्न भले ही उनके जीवन रहते सफल न हो पाया हो, लेकिन उनके व्यक्तित्व से पूरा राजस्थान प्रेरणा लेता है, उनकी वीरता भारत के कण-कण में समाहित है। इस प्रेरणा से परिभूत एक कवि ने राणा के लिए कुछ पंक्तियाँ लिखी है जो उनके अचंभित कर देने वाले व्यक्तित्व को दर्शाता है।

राणा सांगा वो वीर था।
चुभता हुआ अरी को ऐसा तीर था।।
कापते थे सारे ही थर-थर।
साहस इतना जो था राणा में भर-भर।।
तीन-तीन देशों की सेना से लड़ पड़ा था।
सांगा रण बीच खड़ा था।।
तन पर थे अस्सी घाव।
उखड़ गया एक हाथ,
लड़खड़ाए थे पांव।।
फिर भी लोहे सा
अडिग रहा।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2023-24 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई.-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 90% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र को 55% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदाय में डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं./) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 2 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभवों जहाँ संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।	40%	30%	20%

(न्यूनतम अनुभाग)

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए।

राजभाषा विषय पर विभागीय परीक्षा-उपयोगी प्रश्नोत्तर

Questions and Answers on Rajbhasha for Departmental Examinations

1. भारत संघ की राजभाषा क्या है ?
   What is the Official Language of Union of India?
   देवनागरी लिपि में हिंदी / Hindi in Devnagari Script
2. संसद में संविधान का भाग XVII किस तारीख को पारित हुआ ?
   On which date Part XVII of the Constitution was passed in Parliament?
   14.09.1949
3. राजभाषा अधिनियम 1963 कब पारित हुआ ?
   When was Official Languages Act 1963 passed?
   10.05.1963
4. राजभाषा अधिनियम कब संशोधित हुआ ?
   When was Official Languages Act 1963 amended?
   1967
5. राजभाषा नियम के अधीन वर्गीकृत तीन क्षेत्र क्या-क्या हैं ?
   What are all the three regions classified under Official Language Rules?
   क, ख व ग क्षेत्र / A, B & C Regions
6. हर साल "हिन्दी दिवस" कब मनाया जाता है ?
   When is 'Hindi Day' celebrated every Year?
   सितंबर 14 / Septmber 14
7. राजभाषा नियम के अनुसार, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह किस क्षेत्र में आता है ?
   According to Official Languages Rules, under which region Andaman & Nicobar Islands come?
   क क्षेत्र / Region A
8. अरुणाचल प्रदेश की राजभाषा क्या है ?
   What is the Official Language of Arunachal Pradesh?
   अंग्रेजी / English
9. हिंदीतर भाषी क्षेत्रों के निवासियों को दिए गए आश्वासनों को कानूनी रूप देने के लिए पारित अधिनियम क्या है ?
   What is the Act passed to give legal form to the assurances given to Non-Hindi speaking people?
   राजभाषा (संशोधित) अधिनियम-1967 / Official Languages Act (Amended 1967)
10. राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) कब से प्रवृत्त हुई ?
    From when did the Sec 3(3) of Official Languages Act take effect?
    26 जनवरी 1965 / 26 January 1965\
11. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (IV) किससे संबंधित है ?
    With which section IV of Official Languages Act 1963 is concerned?
    संसदीय राजभाषा समिति के गठन से संबंधित है।
    It is concerned with the constitution of Parliamentary Committee on Official Language
12. राजभाषा नीति की जानकारी देने वाले अनुच्छेद 343-351 संविधान के किस भाग में हैं ?
    In which part of the Constitution are the Articles 343-351 that give information about Official Language available?
    भाग - XVII (सत्रहवें भाग) / Part XVII (Seventeenth Part)
13. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 7 का संबंध किसके साथ है ?
    With which Section 7 of Official Language Act 1963 is concerned?
    उच्च न्यायालयों के निर्णयों में हिंदी या अन्य राजभाषा के वैकल्पिक प्रयोग से संबंधित है।
    It is concerned with the optional use of Hindi or Other official Language in Judgements in High Courts.
14. राजभाषा अधिनियम 1963 की धाराएं 6 व 7 किस राज्य में लागू नहीं होतीं ?
    In which state Sections 6&7 of Official Language Act 1963 do not apply?
    जम्मू व कश्मीर / Jammu and Kashmir
15. किन-किन राज्यों में उर्दू को राजभाषा के रूप में घोषित किया गया है ?
    In which states Urdu has been declared as Official Language?
    आंध्रप्रदेश व बिहार / Andhra Pradesh & Bihar
16. आठवीं अनुसूची में सम्मिलित भाषाओं के नाम लिखिए
    Please write the languages available in the 8th sechedule?
    1. असमिया, 2. बंगला, 3. गुजराती, 4. हिंदी, 5, कन्नड़, 6. कश्मीरी, 7. कोंकणी, 8. मलयालम, 9. मणिपुरी, 10. मराठी, 11. नेपाली, 12. उड़िया, 13. पंजाबी, 14. संस्कृत, 15. सिंधी, 16. तमिल, 17. तेलुगु, 18. उर्दू,

19. बोडो, 20. संथाली, 21. मैथिली, 22. डोगरी

1. Assameese, 2. Bengali, 3. Gujarati. 4. Hindi, 5. Kannada, 6. Kashmiri, 7. Konkani, 8. Malyalam, 9. Manipuri, 10. Marathi, 11. Nepali, 12. Oriya, 13. Punjabi, 14. Sanskrit, 15. Sindi, 16. Tamil, 17. Telugu, 18. Urdu, 19. Bodo, 20. Santhali, 21. Maithili, 22. Dogri

17. ख क्षेत्र में आने वाले राज्यों को बताइए/ Please mention the States coming under 'B' region?

गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब तथा संघ राज्य क्षेत्र चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा व नगर हवेली।

Gujarat, Maharashtra, Punjab and Union Territory of Chandigarh, Daman and Diu, Dadar-Nagar Haveli.

18. फिलहाल संविधान की आठवीं अनुसूची में कितनी भाषाएँ सम्मिलित हैं?

At present how many languages are enlisted in the Eighth Schedule of the constitution?

बाईस/22

19. संविधान के भाग- V में राजभाषा नीति संबंधित उपबंध किस अनुच्छेद में हैं ?

In which article is the provision regarding OL policy available in Part V of the constitution?

अनुच्छेद 120/ Article-120

20. संविधान की आठवीं अनुसूची संबंधी प्रावधान उपलब्ध अनुच्छेद का नाम बताइए?

Name the article in which the provision of the Eighth Schedule of the constitution is available?

अनुच्छेद 344(1) & 351, Article-344 (1) &351

21. राजभाषा अधिनियम 1963 क्यों पारित था?

Why was the OL Act 1963 passed?

1965 के बाद भी हिंदी के साथ अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखने का प्रावधान करने के लिए।

To entact the provision the use of English along with Hindi even after 1965.

22. संविधान के XVII भाग में कितने अनुच्छेद हैं ?

How many articles are there in Part XVII of the Constitution?

नौ/9

23. अनुच्छेद 344 के अनुसरण में राजभाषा आयोग की नियुक्ति कब हुई?

In Compliance of article 344 when was the Official Language Commission formed?

वर्ष 1955 में/ In the year 1955

24. राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

Who was the First Chairman of the Official Language Commission?

बी.जी. खेर/ B.G. Kher

25. राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार करने के लिए गठित समिति के प्रथम अध्यक्ष कौन थे?

Who was the First Chairman of the Committee which was formed on the recommendation of the Official Languages Commission?

जी.बी. पंत/ G.B. Pant

26. संविधान के अनुसार सांविधिक नियमों, विनियमों और आदेशों का अनुवाद कौन करता है?

As per the Constitution, who is translating the statutory rules, regulations and orders?

विधि मंत्रालय/ Law Ministry

27. 1965 तक संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए कौन-सी भाषा मुख्य राजभाषा थी तथा कौन-सी भाषा सहायक राजभाषा?

Which were the main language & co-official language used for the Official purpose of the Union of India upto 1965?

अंग्रेजी मुख्य राजभाषा तथा हिंदी सहायक राजभाषा

English was the Main language & Hindi co-official language

28. Part VI में कौन-सा अनुच्छेद है?

Which Article comes under Part VI ?

अनुच्छेद 210/Article 210.

29. वर्ष 1973 में गठित पहली रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की अध्यक्षता किसने की?

Who chaired the first Railway Hindi Salahkar Samiti constituted in 1973?

श्री ललित नारायण मिश्र/Shri Lalit Narayan Mishra

30. वर्ष 1976 में गठित संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष कौन थे?

Who was the Chairman of the Parliamentary Committee on Official Language constituted in the year 1976 ?

तत्कालीन गृह मंत्री श्री ओम मेहता

The then Home Minister Shri Om Mehta.

31. संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी समिति प्रतिवेदन का मसौदा तैयार करती है?

Which committee of the Committee of Parliament on Official Language prepares the draft?

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति

Drafting & Evidence Sub-Committee of the Committee of Parliament on Official Language

32. राष्ट्रपति के 1952 के आदेशों के अनुपालन के लिए रेलवे बोर्ड में किस वर्ष हिंदी सहायक के एक पद का सृजन हुआ था?

In which year the post of Hindi Asst. was created in Railway Board in compliance of President's order of 1952?

वर्ष 1952 में रेलवे बोर्ड की सामान्य शाखा में

In the General Branch of Railway Board in the year 1952.

33. रेलवे बजट का हिंदी अनुवाद सबसे पहले कब तैयार हुआ था तथा उस समय रेल मंत्री कौन थे?

In which year the Hindi translation of Railway Budget was prepared first and who was the Railway Minister?

वर्ष 1956 में, स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी

In the year 1956, Late Lal Bahadur Shastri.

34. रेलवे बोर्ड में हिंदी (संसद) अनुभाग का गठन कब हुआ था?

In which year Hindi (Parliament) section was established in Railway Board?

वर्ष 1960 में/ In the year 1960.

35. "क" क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?

What are all the States that come under Region "A"?

बिहार, झारखंड, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।

Bihar, Jharkhand, Delhi, Haryana, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Chattisgarh, Rajasthan, Uttar Pradesh, Uttranchal, Delhi & Andaman Nicobar Island group.

36. "ग" क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्य कौन-कौन से हैं?

What are all the States that come under Region "C"?

"क" और "ख" क्षेत्र में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, गोवा, जम्मू व कश्मीर, असम, नागालैंड, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर तथा पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्र।

Region "C" means the States and Union Territories other than those referred to in Region A & B, Tamilnadu, Kerala, Karnataka, Andhra Pradesh, Telangana, Orissa, West Bengal, Goa, Jammu & Kashmir, Assam, Nagaland, Meghalaya, Arunachal Pradesh, Sikkim, Tripura, Mizoram, Manipur and Union Territory of Pondicherry.

37. रेल मंत्रालय का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की कौन-सी उप समिति करती है?

Which Sub-Committee of the Committee of Parliament of Official Language inspects Railway Ministry?

दूसरी उप समिति/ Second Sub-Committee

38. हिंदी में कार्यालयीन काम करने के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा लागू की गई योजना क्या है?

What is the scheme implemented by Railway Board for doing work in Hindi?

राजभाषा व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना/ Rajbhasha individual Cash Award Scheme

39. राजभाषा विभाग के राभाकास से क्या मतलब है?

What is the expansion fo OLIC used by Dept. of Official Language?

राजभाषा कार्यान्वयन समिति/Official Language Implementation Committee?

40. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए कितने हिंदी पाठ्यक्रम निर्धारित हैं?

How many Hindi courses are prescribed for Central Govt. employees?

तीन/Three

41. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए निर्धारित प्रारंभिक पाठ्यक्रम क्या है?

Which is the elementary Hindi course prescribed for Central Govt. employees?

प्रबोध/Prabodh

42. केंद्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष कौन हैं?

Who is the Chairman of Central Hindi Committee?

प्रधानमंत्री/Prime Minister

43. संबंधित मंत्रालय/विभाग में हिंदी के प्रचार में प्रगति की समीक्षा किस समिति द्वारा की जाती है?

Which Committee reviews the progress made in the propagation of Hindi in a particular Ministry/Department?

हिंदी सलाहकार समिति/ Hindi Salahkar Samiti

44. सर्वप्रथम संसदीय राजभाषा समिति का गठन कब हुआ?

When was the present Parliamentary Committee on Official Language constituted?

जनवरी 1976/January 1976

45. राजभाषा की संसदीय समिति के कितने सदस्य हैं?

How many members are there in the Parliamentary Committee on Official Language? (30)

46. संसदीय राजभाषा समिति में लोक सभा के कितने सदस्य हैं?

How many Lok Sabha Members are there in the Committee of Parliament on Official Language?

(20)

47. फिलहाल राजभाषा की संसदीय समिति की कितनी उप-समितियां हैं?

At present, how many sub-Committees are there in the Parliamentary Committee on Official Language?

3 उप समितियां/3 Sub-committees

48. संसदीय राजभाषा समिति की मुख्य ड्यूटी क्या है?

What is the main duty of the Committee of Parliament on Official Language?

हिंदी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा करना

To review the progressive use of Hindi

49. प्रमुख नगरों में गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं?

Who is the Chairman of the Town Official Language Implementation Committee constituted in major cities?

नगर के केन्द्र सरकार कार्यालय के वरिष्ठतम अधिकारी

Senior most Central Govt. Officer of the city.

50. राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की आवधिकता क्या है ?

What is the periodicity of the meetings of Offcial Language Implementation Committee?

3 महीने में एक बार/Once in 3 months.

51. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों की आवधिकता क्या है?

What is the periodicity of the meetings of Town Official Language Implementation Committee?

6 महीने में एक बार/Once in 6 months.

52. राजभाषा पर वार्षिक कार्यक्रम कौन तैयार करता है?

Who prepares the Annual Programme on Official Language?

गृह मंत्रालय/Ministry of Home Affairs

53. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रम क्या-क्या हैं ?

What are the Hindi courses prescribed for Central Govt. employees?

प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ

Prabodh, Praveen & Pragya

54. केंद्र सरकार के लिपिकीय कर्मचारियों के लिये निर्धारित अंतिम पाठ्यक्रम क्या है?

Which is the final Hindi course prescribed for Clerical cadre employees of Central Govt.?

प्राज्ञ/Pragya

55. हिंदी पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित होने के लिए केंद्र सरकार के कर्मचारियों को कौन-सी प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध हैं?

What are all the training facilities available to a Central Govt employee to get trained in the Hindi Courses?

नियमित, गहन, पत्राचार एवं प्राइवेट

Regular, Intensive, Correspon-dence and Private

56. साल में कितनी बार नियमित पाठ्यक्रम की हिंदी परीक्षाएं चलाई जाती हैं?

How many times are the Regular Hindi examinations conducted in a year?

दो बार/2 times

57. नियमित हिंदी परीक्षाएं किन-किन महीनों में चलाई जाती हैं?

In which months Regular-Hindi examinations are conducted?

मई व नवंबर/ May and November

58. हिंदी पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षित होने के लिए कौन योग्य होंगे?

Who are eligible to be trained in the Hindi courses?

केन्द्र सरकार के श्रेणी III कर्मचारी व उससे ऊपर के अधिकारी

All the Central Govt. employees in Class III and above.

59. कोटि 'क' में वर्गीकृत कर्मचारी कौन हैं ?

Who are all the employees classified under Category 'A'.

जिनकी मातृभाषा हिंदी या हिन्दुस्तानी या उसकी बोली है

Those employees whose mother tongue is Hindi or Hindustani or its dialect.

60. कोटि 'ख' में वर्गीकृत कर्मचारी कौन हैं?

Who are all the employees classified under Category 'B''?

जिनकी मातृभाषा उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, पश्तो, सिन्धी या सह भाषा है।

Those employees whose mother tongue is Urdu, Punjabi, Kashmiri, Pusto, Sindhi or other allied languages.

61. कोटि 'ग' में वर्गीकृत कर्मचारी कौन हैं ?
Who are all the employees classified under category 'C'?
जिनकी मातृभाषा मराठी, गुजराती, बंगाली, उड़िया या असमिया है।
Those employess whose mother tongue is Marathi, Gujarati, Bengali, Oriya or Assameese.

62. कोटि 'घ' में वर्गीकृत कर्मचारी कौन हैं ?
Who are all the employees classified under category 'D'?
जो दक्षिण भारत की भाषा या अंग्रेजी बोलते हैं।
Those employees who speak a South Indian Language or English.

63. कोटि 'ग' के कर्मचारियों को किस पाठ्यक्रम से प्रशिक्षित होना अपेक्षित है ?
From which course a category 'C' employee required to be trained?
प्रवीण/From Praveen.

64. कोटि 'घ' के कर्मचारियों को किस पाठ्यक्रम से प्रशिक्षित होना अपेक्षित है ?
From which course a category 'D' employee required to be trained?
प्रबोध/From Prabodh.

65. प्राज्ञ पास करने पर मिलने वाला एकमुश्त पुरस्कार क्या है ?
What is the lumpsum Award for passing Pragya?
रु./Rs. 2400/-

66. नाम, पदनाम, साइन बोर्ड को किस क्रम में प्रदर्शित किया जाना है ?
In which order Name, Designation and Sign Boards are to be exhibited ?
1. प्रादेशिक भाषा 2. हिंदी 3. अंग्रेजी
1. Regional Language 2. Hindi 3. English

67. आम जनता द्वारा प्रयोग किए जाने वाले फार्मों को किस क्रम में तैयार किया जाना है ?
In which order forms used by Public are to be prepared?
त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)
Trilingual from (1. Regional Language 2. Hindi 3. English)

68. रबड़ मुहरों को किस प्रकार तैयार किया जाना है ?
In which order Rubber Stamps are to prepared?
हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में - एक लाइन हिंदी एक लाइन अंग्रेजी
Hindi-English Bilingual form-one line Hindi and one line English.

69. हिंदी टंकण निजी तौर से उत्तीर्ण करने पर मिलने वाली एकमुश्त राशि क्या है ?
What is the lumpsum award for passing Hindi Typewriting Examination by private study?
रु./Rs. 1600/-

70. अष्टम अनुसूची में शामिल विदेशी भाषा क्या है ?
What is the Foreign Language included in the Eighth Schedule?
नेपाली/Nepali

71. मंडल रेल कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष कौन हैं ?
Who is the Chairman of the Divl. Official Language Implementation Committee?
मंडल रेल प्रबंधक/Divisional Railway Manager.

72. केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए कौन-सा मंत्रालय/कार्यालय हिंदी परीक्षाएं चलाता है ?
Which Ministry/Office is conducting the exams for the Central Govt. employees?
गृहमंत्रालय के अधीन हिंदी शिक्षण योजना/Hindi Teaching Scheme under Home Ministry.

73. एकमुश्त पुरस्कार के लिए कौन अर्हक होंगे ?
Who is eligible for lumpsum award?
ऐसे कर्मचारी जो हिंदी परीक्षा प्राइवेट तौर पर पास करते हैं
Those employees who pass the Hindi exams by private efforts.

74. स्टेशन उद्घोषणाओं को किस भाषा के क्रम में करना है ?
In which order are the Station announcements made?
त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)/Trilingual (Regional, Hindi & English).

75. रूफ बोर्ड किस अनुपात में प्रदर्शित करना है ?
In which proportion the Roof Board has to be displayed?
समानुपाती में- त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी) In equal proportion-Trilingual (Regional, Hindi & English).

76. गाड़ियों के पैनल बोर्ड को किस प्रकार प्रदर्शित किया जाना है ?

How the panel Board of a train has to be displayed?

त्रिभाषी (प्रादेशिक, हिंदी व अंग्रेजी)/In trilingual (Regional, Hindi & English)

77. वैयक्तिक वेतन के लिए कौन अर्हक होंगे ?

Who are all eligible for Personal Pay?

केंद्रीय सरकार की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या, जब उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के संबंध में उस योजना के अंतर्गत कोई निर्धारित परीक्षा में विनिर्दिष्ट प्रतिशत अंक लेकर उत्तीर्ण होने पर।

On passing Pragya Examination organised by The HTS of the Central Government or on passing the prescribed exam duly securing the specified % of marks for certain categories by the Central Government.

78. राजभाषा कार्यान्वयन समिति संयोजकों को दिए जाने वाले मानदेय की राशि क्या है ?

What is the amount of Honorarium given to the OLIC Clerks?

रु./Rs. 600/-

79. हिंदी वार्तालाप पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण पाने के लिए कौन-कौन योग्य हैं ?

Who are eligible to undergo training in Hindi conversation course?

चालू लाइन के सभी कर्मचारी जो आम जनता से सीधे संपर्क करते हैं। (वर्ग IV के कर्मचारी सहित)

All the open line staff (including Class-IV) who come in contact with public directly.

80. केंद्र सरकार के अधिकारी/कर्मचारी को क्यों हिंदी प्रशिक्षण दिया जाता है ?

Why training in Hindi is imparted to Central Government officers/Employees?

ताकि वे हिंदी में अपना दैनंदिन काम करें/By which they can do their day-to-day work in Hindi.

81. हिंदी वार्तालाप पाठ्यक्रम की अवधि क्या है?

What is the duration for Hindi conversation course?

30 घंटे/30 Hrs.

82. कार्यशाला में प्रशिक्षित होने के लिए कौन योग्य हैं?

Who are eligible to undergo training in Hindi workshop?

सभी श्रेणी III के कर्मचारी और राजपत्रित अधिकारी जिन्हें हिंदी कार्यसाधक ज्ञान/प्रवीणता प्राप्त है

All class-III and Gazetted staff who have working knowledge/proficiency in Hindi.

83. हिंदी आशुलिपि पास करने पर आशुलिपिक, जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है, को क्या वैयक्तिक वेतन दिया जाता है ?

What is the Personal Pay given for passing Hindi Stenography to a stenographer whose mother tongue is not Hindi?

वैयक्तिक वेतन के रूप में 12 महीनों के लिए 2 वेतनवृद्धि के समतुल्य राशि

Personal Pay equivalent to 2 increments for a period of 12 months.

84. हिंदी प्रोत्साहन भत्ते के पात्र बनने के लिए टंकक/आशुलिपिक को कितना टंकण कार्य करना चाहिए?

What is the quantum of Hindi Typing work to be done by a Typist/Steno to become eligible for Hindi incentive allowance?

हिंदी में प्रतिदिन पांच नोट या तिमाही में 300 नोट

5 notes in Hindi in a day or 300 notes in Hindi in a quarter.

85. 90% से ज्यादा और 95% से कम अंक सहित हिंदी टंकण पास करने पर मिलने वाला नकद पुरस्कार क्या है ?

What is ths amount of Cash Award for passing Hindi typing with 90% or more but less than 95% or marks?

रु./Rs. 800/-

86. हिंदी आशुलिपि में 95% से ज्यादा अंक प्राप्त करने पर क्या नकद पुरस्कार मिलेगा?

What is the amount for passing Hindi Stenography with 95% or more marks?

रु./Rs. 2400/-

87. अंशकालिक हिंदी पुस्तकपाल को दिया जाने वाला मानदेय क्या है?

What is the honorarium amount to Part-time Hindi Librarian?

रु./Rs. 1000/- प्रतिमाह/per month

राजभाषा प्रोत्साहन / पुरस्कार योजनाएं

भारत सरकार की राजभाषा नीति और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार रेल के विभिन्न कार्यालयों में सरकारी काम-काज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न प्रोत्साहन/पुरस्कार योजनाएं लागू हैं।

1. कमलापति त्रिपाठी राजभाषा स्वर्ण पदक (रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2023/प्र.-7/2, दिनांक- 03.05.2023)

महाप्रबंधकों एवं उनसे उच्च अधिकारियों के लिए (10,000/- रु + प्रशस्ति पत्र) - कुल 01

2. रेलमंत्री राजभाषा रजत पदक (रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2023/प्र.-7/2, दिनांक- 03.05.2023)

हिंदी के प्रयोग-प्रसार में प्रशंसनीय योगदान के लिए रेलों / उत्पादनों के वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (SAG) एवं उनसे उच्च अधिकारियों के लिए (8,000/- रु + प्रशस्ति पत्र) - कुल 30

3. रेलमंत्री राजभाषा शील्ड / ट्राफी तथा अन्य चल वैजयंती पुरस्कार योजना

(रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2021/रा.भा.19/1, दिनांक- 12.10.2021)

क्षेत्रीय रेलों के मुख्यालयों / मंडलों / स्टेशनों / कारखानों में राजभाषा हिंदी का सर्वाधिक एवं प्रशंसनीय कार्य करने पर प्रत्येक वर्ष से ये शील्ड / ट्राफी एवं पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं –

'क' व 'ख' क्षेत्र में स्थित रेलों के लिए :-

प्रथम पुरस्कार - रेल मंत्री राजभाषा शील्ड	01
द्वितीय पुरस्कार - रेल मंत्री राजभाषा ट्राफी	01

'क' व 'ख' क्षेत्र में स्थित आदर्श मंडलों के लिए :-

आचार्य महावीर प्रसाद चल वैजयंती पुरस्कार	01

'ग' क्षेत्र में स्थित रेलों के लिए :-

प्रथम पुरस्कार - रेल मंत्री राजभाषा शील्ड	01
द्वितीय पुरस्कार - रेल मंत्री राजभाषा ट्राफी	01

'ग' क्षेत्र में स्थित आदर्श मंडलों के लिए :-

आचार्य रघुवीर चल वैजयंती पुरस्कार	01

4. लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार योजना

(रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2021/प्र.-714, दिनांक- 03.05.2021)

रेल कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा को बढ़ावा देने तथा तकनीकी विषयों पर अधिकाधिक पुस्तक उपलब्ध हो सके इस उद्देश्य से यह योजना लागू है। इसके लिए प्रकाशित पुस्तक में कम से कम 100 पृष्ठ होने चाहिए ।

प्रथम पुरस्कार	20,000/- रु. + प्रमाण पत्र
द्वितीय पुरस्कार	10,000/- रु. + प्रमाण पत्र
तृतीय पुरस्कार	7,000/- रु. + प्रमाण पत्र

5. मैथलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना (काव्य संग्रह)

(रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2018/प्र.-7/2, दिनांक- 08.02.2018)

सेवारत रेल कर्मचारियों की काव्य / गज़ल लेखन की प्रतिभा एवं अभिरूचि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह योजना लागू है। इसके लिए प्रकाशित पुस्तक में कम से कम 100 पृष्ठ होने चाहिए ।

प्रथम पुरस्कार 20,000/- रु. द्वितीय पुरस्कार 10,000/- रु. तृतीय पुरस्कार 7,000/- रु.

6. रेल मंत्री राजभाषा व्यक्तिगत / नकद पुरस्कार योजना

सरकारी कामकाज मे हिंदी का अधिकाधिक व प्रशासनीय प्रयोग करने के लिए कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड तक के अधिकारी तथा राजपत्रित वर्ग के लिए -

3,000/- रु. प्रत्येक चयनित कर्मचारी को (सभी रेलवे को निर्धारित कोटे के अनुसार)

7. प्रेमचंद पुरस्कार योजना (कथा / कहानी, उपन्यास नाटक एवं अन्य गद्य साहित्य)

(रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2018/प्र.-7/2, दिनांक- 08.02.2018)

सेवारत रेल कर्मचारियों की कथा / कहानी, उपन्यास नाटक एवं अन्य गद्य साहित्य लेखन की प्रतिभा एवं अभिरूचि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यह योजना लागू है। इसके लिए प्रकाशित पुस्तक में कम से कम 100 पृष्ठ होने चाहिए।

प्रथम पुरस्कार 20,000/- रु. द्वितीय पुरस्कार 10,000/- रु. तृतीय पुरस्कार 7,000/- रु.

8. रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता

(रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2021/प्र.-21/3, दिनांक- 22.12.2021)

रेलवे बोर्ड कार्यालय द्वारा दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर, न्यूनतम 2000 शब्दों और अधिकतम 2500 शब्दों में, निबंध लिखकर रेलवे बोर्ड कार्यालय को भेजना होता है। इस प्रतियोगिता के पुरस्कार "राष्ट्रीय रेल पुरस्कार समारोह" के अवसर पर दिए जाते है ।

राजपत्रित वर्ग के लिए :-

प्रथम पुरस्कार - 6,000/- रु. द्वितीय पुरस्कार - 4,000/- रु.

अराजपत्रित वर्ग के लिए :-

प्रथम पुरस्कार - 6,000/- रु. द्वितीय पुरस्कार - 4,000/- रु.

9. रेल हिंदी निबंध, वाक्, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता

(रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2023/प्र.-21/1, दिनांक 26.04.2015)

हिंदी निबंध, वाक्, टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता में सभी भाषा-भाषी अधिकारी एवं तृतीय श्रेणी कर्मचारी भाग लेने के पात्र होते हैं । ये प्रतियोगिताएं मंडल, मुख्यालय एवं रेलवे बोर्ड स्तर पर आयोजित की जाती है । प्रत्येक प्रतियोगिता में निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाते हैं -

अखिल स्तर पर पुरस्कार :-

प्रथम पुरस्कार - 5,000/- रु.
द्वितीय पुरस्कार - 4,000/- रु.
तृतीय पुरस्कार - 3,000/- रु.
सांत्वना पुरस्कार (पाँच) -2,500/- रु.

क्षेत्रीय स्तर पर पुरस्कार :-

प्रथम पुरस्कार - 3,000/- रु.
द्वितीय पुरस्कार - 2,500/- रु.
तृतीय पुरस्कार - 2,000/- रु.
सांत्वना पुरस्कार (तीन) - 1,500/- रु.

मंडल स्तर पर पुरस्कार :-

प्रथम पुरस्कार - 1,000/- रु.
द्वितीय पुरस्कार - 800/- रु.
तृतीय पुरस्कार - 600/- रु.
सांत्वना पुरस्कार (तीन) - 400/- रु.

10. रेल यात्रा वृतांत पुरस्कार योजना, वर्ष 2023

(रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2023/प्रशि.-7/1, दिनांक 25.04.2023)

रेल वृतांत लेखक की मौलिक होनी चाहिए जिसमें न्यूनतम 3000 शब्द और अधिकतम 3500 शब्द हो।

प्रथम पुरस्कार 10,000/- रु.
द्वितीय पुरस्कार 8,000/- रु.
तृतीय पुरस्कार 6,000/- रु.
प्रेरणा पुरस्कार (पाँच) 4,000/- रु. प्रत्येक

11. हिंदी के सर्वाधिक प्रयोग करने वाले विभागों के लिए सामूहिक पुरस्कार योजना

प्रथम पुरस्कार 12,000/- रु.मुख्यालय में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले विभाग के कुल 6 कर्मचारियों के बीच उक्त राशि का वितरण किया जाता है

द्वितीय पुरस्कार 8,000/- रु.संबंधित रेलवे के मंडलों में से हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाली शाखा के कुल 5 कर्मचारियों के बीच उक्त राशि का वितरण किया जाता है

तृतीय पुरस्कार 6,000/- रु.संबंधित रेलवे के कारखानों (वर्कशॉप) में हिंदी का सर्वाधिक प्रयोग करने वाले कुल 6 कर्मचारियों के बीच उक्त राशि का वितरण किया जाता है

12. क्षेत्रीय / अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव

(रेलवे बोर्ड का पत्रांक - हिंदी-2020/प्र.-16/1, दिनांक- 17.03.2022)

राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में रंगमंच और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की अहम भूमिका को स्वीकार करते हुए रेल मंत्रालय प्रत्येक वर्ष क्षेत्रीय रेलों और उत्पादन कारखानों के लिए क्षेत्रीय / अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव का आयोजन करवाते है । नाटक में भाग लेने कलाकारों की संख्या 15 से अधिक नहीं होनी चाहिए। इस नाट्योत्सव के तहत निम्नलिखित पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं –

क्रम सं.	विधा	पुरस्कार राशि
1.	प्रथम पुरस्कार	5,000/- रु. + ट्रॉफी + प्रमाण पत्र
2.	द्वितीय पुरस्कार	4,000/- रु. + ट्रॉफी + प्रमाण पत्र
3.	तृतीय पुरस्कार	3,000/- रु. + ट्रॉफी + प्रमाण पत्र
4.	प्रथम प्रेरणा पुरस्कार	2,000/- रु. + स्मृति चिह्न + प्रमाण पत्र
5.	द्वितीय प्रेरणा पुरस्कार	2,000/- रु. + स्मृति चिह्न + प्रमाण पत्र
6.	तृतीय प्रेरणा पुरस्कार	2,000/- रु. + स्मृति चिह्न + प्रमाण पत्र
7.	चौथा प्रेरणा पुरस्कार	2,000/- रु. + स्मृति चिह्न + प्रमाण पत्र
8.	पाँचवा प्रेरणा पुरस्कार	2,000/- रु. + स्मृति चिह्न + प्रमाण पत्र

नाटक की विभिन्न विधाओं से जुड़े अन्य 15 पुरस्कार

1. सर्वश्रेष्ठ निर्देशक
2. सर्वश्रेष्ठ अभिनेता
3. सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
4. सर्वश्रेष्ठ सह-अभिनेता
5. सर्वश्रेष्ठ सह-अभिनेत्री
6. सर्वश्रेष्ठ संगीत
7. सर्वश्रेष्ठ ध्वनि प्रवाह
8. सर्वश्रेष्ठ मंच सज्जा
9. सर्वश्रेष्ठ प्रकाश परिकल्पना
10. सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा
11. सर्वश्रेष्ठ रुपसज्जा
12. सर्वश्रेष्ठ उच्चारण
13. सर्वश्रेष्ठ स्क्रिप्ट लेखन
14. सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार
15. सर्वश्रेष्ठ विशिष्ट अभिनय पुरस्कार

उक्त सभी विजेताओं को पुरस्कार स्वरुप 1,000/- रु. + स्मृति चिह्न + प्रमाण पत्र

13. हिंदी डिक्टेशन पुरस्कार योजना

हिंदी में अधिकाधिक डिक्टेशन देने के लिए अधिकारियों को प्रोत्साहित करने के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

i. हिंदी भाषी अधिकारियों द्वारा वर्ष भर में कम से कम 20,000 शब्दों का डिक्टेशन देने होते है।

ii. अहिंदी भाषी अधिकारियों द्वारा वर्ष भर में कम से कम 10,000 शब्दों का डिक्टेशन देने होते है।

'क' व 'ख' क्षेत्र के निवासी अधिकारियों के लिए :-
पुरस्कार राशि 5,000/- रु.

'ग' क्षेत्र के निवासी अधिकारियों के लिए :-
पुरस्कार राशि 2,000/- रु.

14. राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना

भारत के सभी नागरिकों के लिए हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए यह पुरस्कार दिया जाती है।

प्रथम पुरस्कार 2,00,000/- रु. + प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह

द्वितीय पुरस्कार 1,25,000/- रु. + प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह

तृतीय पुरस्कार 75,000/- रु. + प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह

फाइलों पर टिप्पणी में काम आने वाले वाक्यांश

Draft for approval	संशोधित मसौदा प्रस्तुत है
Draft is concurred in	अनुमोदनार्थ मसौदा
Draft reply is put up for approval	मसौदे से सहमति है, उत्तर का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है
Draw attention	ध्यान आकर्षित करना / ध्यान दिलाना
Duly complied	विधिवत पालन किया गया
During the course of discussion	विचार-विमर्श के दौरान / चर्चा के दौरान
During this period	इस अवधि में
Early orders are solicited	आदेश शीघ्र भेजने की कृपा करें
Exigencies of public service	लोक-सेवा की आवश्यकताएं
Expedite action	कार्यवाही शीघ्र करें/कार्यवाही में शीघ्रता करें
Explained in your letter	आपके पत्र में स्पष्ट किया गया
Explanation from the defaulter may be obtained	बकायादार से स्पष्टीकरण मांगा जाए/ बकायादार से जवाब-तलब किया जाए
Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
For and on behalf of	-के लिए और उनकी ओर से
For approval	अनुमोदनार्थ/अनुमोदन के लिए
For consideration	विचारार्थ
For disposal	1. निवर्तन के लिए/ निपटाने के लिए 2. व्ययन के लिए
For expression of opinion	मत प्रकट करने के लिए / राय देने के लिए
For favourable action	अनुकूल कार्यवाही के लिए
For favour of doing the needful	यथावश्यक कार्यवाही की कृपा के लिए/ कृपया आवश्यक कार्यवाही की जाए
For favour of orders	आदेशार्थ
For further action	आगे की कार्यवाही के लिए /अगली कार्यवाही के लिए
For guidance	मार्गदर्शन के लिए
For information	सूचनार्थ/ सूचना के लिए
For onward transmission	आगे भेजने के लिए
For perusal	अवलोकनार्थ
For perusal and return	देखकर लौटाने के लिए
For precedent please see	नजीर के लिए कृपया- देखिए
For signature	हस्ताक्षरार्थ/ हस्ताक्षर के लिए/ दस्तखत के लिए
For such action as may be necessary	यथा आवश्यक कार्यवाही के लिए
For suggestion	सुझाव देने के लिए/ सुझावों के लिए

For sympathetic consideration	सहानुभूतिपूर्वक विचार करने के लिए
For the present	अभी/फिलहाल
Forwarded and recommended	अग्रेषित और संस्तुत/अग्रसारित और संस्तुत
Fresh receipt (F. R.)	नई आवती (न.आ.)
From	प्रेषक
Further orders will follow	आगे और आदेश भेजे जाएंगे
Hard and fast rule	पक्का नियम
Has no comments to make	-को कोई टीका नहीं करनी है
His request be acceded to	उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाए
Hold in abeyance	रोक रखना/आस्थगित रखना
Hold lien on post	पद पर पुनग्रहणाधिकार होना/ पद पर लियन होना
I agree with 'A' above	मैं ऊपर 'क' से सहमत हूं
I am desired to say	मुझे निवेदन करने के लिए कहा गया है
I am directed to	मुझे निदेश हुआ है
I am to add	मुझे यह भी लिखना है
I beg to submit	निवेदन है कि
I fully agree with the office note	कार्यालय की टिप्पणी से मैं पूर्णतया सहमत हूँ
I have been directed to inform you/ request you/ask you	मुझे निदेश हुआ है कि मैं आपको सूचित करूं/ आपसे निवेदन करूं/ आपसे पूछूं
I have the honour to say	सादर निवेदन है
In accordance with	-के अतिरिक्त
In addition to	-के अनुसार
In anticipation of	-की प्रत्याशा में
In as much as	जहां तक कि
In compliance with	-का पालन करते हुए/ -के अनुपालन में
In confirmation of	-की पुष्टि में
In connection with	-के संबंध में
In consequence of	-के परिणामस्वरूप
In consultation with	-से परामर्श करके
In continuation of	-के आगे/-के सिलसिले में/के क्रम में
In contravention of	-के विपरीत का उल्लंघन करते हुए
In course of	-के दौरान
In course of business	काम के दौरान
In course of time	यथासमय
In default of	1. -के अभाव में 2. -न करने पर
In detail	विस्तार से/ ब्योरेवार
In due course	यथाविधि

देवदूत विश्वास
काधी, संरक्षा

प्रियंका गुहा नियोगी
वरिष्ठ नर्सिंग अधीक्षक,
आर्थोपेडिक अस्पताल, हावड़ा

मौमीता चौधुरी
मुख्य नर्सिंग अधीक्षक,
आर्थोपेडिक अस्पताल, हावड़ा

श्रीरामपुर एवं पांडुआ में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित हिंदी आशुलिपिक प्रतियोगिता